फ़ितरत

1) उम्मीद ही सब कुछ लगे,
वो फ़ितरत भी क्या खूब।
हम बचते रहे मौत से,
नाउम्मीदी से ही बखूब।

दिल

2) मेरी जुबां में यूँ एक,
खलल सा आ गया।
या कहिए यूँ कि
दिल में शबाबे करार आ गया।

घर

3) किसी को हुस्न से ऐसा
नाजायज परहेज क्यों होता
वो रस्ता कूँचा ऐ यार
मेरे घर के जो दरम्याँ न होता।

नशा

4) दौर ऐ सागर[1] भी
ग़मे दरिया[2] का इलाज नहीं
सुकूं उन्हें भी नहीं
जो नशे में बहकते नहीं।

हालात

5) वाकया भी मेरी समझ से
बिलकुल फ़रार था
मैं डूब कर कैसे मरा
जब दरिया न पास था।

दौर ऐ सागर– यारों के साथ बैठकर शराब पीना
गमे दरिया– गमों की बाढ़

ज़माना

6)	हुआ बेजार[1] ग़म से मैं
न होता तो भी क्या होता
सुकूं ज़माने को मिल गया
न मिलता तो भी क्या होता।

प्यास

7)	वो सब शागिर्द थे मेरे
आशिकी भी की नसीहतें मेरी
अब ज़माना है बस उनका
मुझे समझाते हैं बात मेरी।

बेजार– मायूस

हालत

8)	शराब अभी प्याले में बाकी है,
मुझको भी प्यास अभी बाकी है,
मैं ही मुशक्कतगाह[1] में नहीं,
और भी चाहबर[2] यहाँ बाकी हैं।

हालात

9)	वो ज़िंदगी थी खूब
ठहाकों में गुज़र गयी
अब जो बची है वो
कहीं रोने की जगह नहीं।

मुशक्कतगाह–
चाहबर–

10) ना देकर अपने पैगाम को मैं

उनके दरबान को जरा चला

यूँ वापस आया कि

पता उनको हो गया जरा।

बदनामी

11) फ़हरिस्ते[1] ऐबो से बदनाम हूँ

मैक़श[2] नहीं पर बदनाम हूँ

तफ़रीह[3] तूझसे न कर सका

पर तेरी आशिकी में बदनाम हूँ।

फ़हरिस्ते– सूची ऐबों की
मैक़श– शराब पीना
तफ़रीह– हंसी मजाक

वक्त

12) कितने मुश्ताक[1] हैं वो
और अंदाज नादान से
गोया ये वक्त नहीं
कि रूबरू हों कयामत से।

जिन्दगी

13) जिंदगी बदस्तूर गुज़र रही
कुछ नया नहीं खास नहीं
सोचता हूँ तू ही आ जाऐ
क्या पता वो भी खास नहीं।

मुश्ताक– चालाक

14) एक ग़फ़लत सी खत्म हो गई

फुर्सत से नफ़रत हो गई

इश्क भी क्या जरूरी है

करीबी तुझसे शुरू हो गई।

अरमान

15) ढूँढे हैं मेरे अरमान

फिर एक राह नयी

शायद बनाई थी मैंने

खो जाने को कहीं।

जाम

16) जाम पर जाम पिये जा रहा हूँ

सोचते सोचते खाली हुए जा रहा हूँ

दिल भी लगता है लगता नहीं

बस तेरा ही ख्याल किये जा रहा हूँ।

रफ्तार

17) जमाने की रफ्तार
कितनी तेज हो गई है
जवानी से पहली
शबाब सब उड़ गई है।

दस्तूर

18) निकलते निकलते घिर गया
दुनिया के दस्तूर में
उम्मीद थी निकल जाऊँगा
उम्र निकल गई खेल में।

तकल्लुफ

19) कशमकश थी कैसे कहूँ
थी उनको भी तकल्लुफ जरा
देर तक हम रूके रहे रहे
फिर भी कुछ न हुआ जरा।

फिज़ा

20) अपनो में मन लगता नहीं
ग़ैरों में कुछ तो सुकूँ है
फिज़ा में कुछ भी है नहीं
आबो हवा कहने को है।

मोहब्बत

21) मोहब्बत ऐ दिल
मोहब्बत ही करेंगे सदा
उनका भी क्या
जो घर बसा लेते हैं।

आवारगी

22) कतरा ही बोहत है
मेरे डूबने के लिए
वरना तैराक भी हूँ
आवारगी के लिए।

घुटन

23) मेरे चाहने से क्या
ग़मे जिंदगी को पटक दूँ कहीं
है जिंदगी बेदखल
बस एक घुटन सी है कहीं।

शौक

24) मुझे बरबाद तो होना था

कैसे न कैसे उनकी खातिर

तमाम जिंदगी गुजर गई

और शौक बरकरार रह गया।

वहम

25) अंदेशा आने की आहट का

क्यों वहम बन गया

जिंदगी तेरी एक झलक का

कुछ मज़ाक बन गया।

आरजू

26) उम्र कुछ तो गुजरी

बड़ी बेकसी में लेकिन

शुक्र खुदा का यूँ

अब कोई आरजू नहीं।

मजमा

27) मरने वाले तो चले गए
बेबस थे जाने की जल्दी में
उनके ही आशियाने पर
मजमा ऐ सवाल जीने वालो में।

मुसाफ़िर

28) कहूँ किससे मैं खुद को
परेशान हूँ बोहत
हैं ये भी सब मेरी तरह
मुसाफ़िर सफर के।

जीस्त

29) कितने बरसों से
हसरतों ने ही दम तोड़ा
फिर तेरी अदा ने
जीस्त को दी अंगड़ाई।

दिल

30) बड़ा इकरारे जिगर था
वो दिल की मजबूरी मेरी
उन्हें एक आरजू थी
न थी शायद जरूरत मेरी।

क़ौम

31) आवाज वतन खिलाफ़त की
ये दौर गिर गया क़ौम से
ये गए वक़्त के मरीज है
इन्हें कुछ न कहो बड़े जोर से।

32) मुझे इजाज़त न मिली तेरी
तुझसे ख्वाबों में मिलने की
है अजब अदा भी क्या तेरी
यूँ ही मुझसे रोज़ मिलने की।

वक्त

33) सब जिंदगी गुजर गई
दर्द बेदर्द वक्त दर वक्त
अब शौक है फ़रागत[1]
आए वक्त से या बेवक्त।

कसम

34) तेरी हकीकत ऐ दलील को
कैसे न माना जमाने ने
कसम झूठी खाकर मनाने में
तुम मशहूर थे जमाने में।

फ़रागत– छुटकारा

दर्द

35) गुमां मोहब्बत का हमको
रुला देगा एक रोज
लम्हे दर्द के इसमे वो सब
याद आएंगे एक रोज।

सब्र

36) हालात मेरे कुछ ठहर गये
मेरे दिल को अकेला छोड़ गए
मेरी सब्र को समझ में आता है
वो मयस्सर[1] है मुड़ती राह पर।

मयस्सर– किस्मत में

37) ‘बेकार’ तू भी बकवास हुआ

कह कहकर अपनी बात

जमाने को जो न सुननी थी

न समझनी थी तेरी बात।

बाद:ख्वारी

38) वो बाद:ख्वारी[1] के दिन

हकीकत में बुरे न थे

थे ठिकाने भी कहीं कहीं

दिल के भी बुरे न थे।

बरबाद

39) मैं बदनाम तो कर दूं

बेजा[2] कुदरत को यूँ जरा

बरबादी का मेरी जिंदगी

में मेरा ही हाथ है।

बाद:ख्वारी– शराब पीना

बेजा– अनुचित

गुफ्तगु

40) ऐसी तो कोई बात नहीं

मुझे इश्क़े गुफ्तगु न आती हो

तुझे देख मैं जी भर लूं

फिर जिंदगी भर की बातें हैं।

अफ़साना

41) बनाया था जो अफ़साना

कि रुसवा जमाने में हुआ

उन्हें भी शिकवा था कुछ

कि वो आधा अधूरा ही रहा।

सामना

42) यूँ तो हम

मरे न थे जिंदगी में कभी

इलम न था

उनसे भी सामना होगा कभी।

क़यामत

43) क्यूँ बेकरार है जिंदगी
कुदरत के सैलाब में
याद करें हैं सालगिरह
क़यामत ऐ क़ौम पर

मकसद

44) जिंदगी के मायने है क्या
ताल्लुक नहीं जीने से इसका
जो फ़ना हो गये जीते जी
बता गये सब मकसद इसका।

मुलाजिम

45) मुझे तेरी ही तलाश थी
फ़क़त[1] दफ्तरे कायनात में
तू तो न मिली मुझे वहाँ
मैं खामखां मुलाजिम हो गया।

फ़क़त– सिफ

रवायत

46) तुम्हे भी आना ही था
कुछ रस्मों रिवाज के साथ
हम तो छोड़ चुके थे
पहले ही रवायतों का साथ।

तन्हाई

47) तन्हा सी तन्हाई
हर वक्त साथ रहती है मेरे
वो और बात है
मैं इससे दूर रहता हूँ जरा।

ख़लवत

48) खिज़ा[1] ऐ ख़लवत[2] की दिलकशी
से इतना न मुँह मोड़
काम आयेगी तेरी ज़ीस्त[3] में
तुझे करीब लाने को तेरे साथ।

कुदरत

49) मरना था उसको मर गया
कुदरत की बात है
कैसे हुआ अब होगा क्या
बेकार की बात है।

खिज़ा– पतझड़
ख़लवत– अकेलापन
ज़ीस्त– जिन्दगी

तन्हाई

50) बड़ी मुद्दतों के बाद
फिर एक शाम महक गई
अर्से पुरानी तन्हाई
आकर उस पल बहक गई।

इश्क़

51) इश्क़ भी बदनाम न हो तो
फिर इश्क़ क्या आबाद होगा
कहने को ये एक फसाना
इसका कोई अंजाम न होगा।

दूरी

52) ये इश्क़े आशिकी भी खूब
मोहब्बते आलम भी खूब
जो हैं दूर इससे जरा
वो शख्सियत भी खूब।

मुकरना

53) मुकर जाना भी तेरा जब
गुज़र गया जमाना भी अब
मिलने को वो मुलाकात न थी
मानने की न जरूरत थी तब।

गंवारा

54) हम भी जां देने को
बेताब थे उनके लिए मगर
यूँ तो तैयार थे वो
जमाने को गंवारा न था।

गुलजार

55) जमाना तो हमसे मगर
जरा गुलजार न हुआ
गुजरे जिस कूचे से हम
वो आबाद हो गया।

खुशबु

56) खुशबु जिस्म ऐ माशुका
मुझे बुखार चढ़ गया
और ऐसे ही मैं तबीब[1]
खुद बीमार हो गया।

रात

57) ये रात के साये डसने वाले
खौफ़ नहीं क्यूँ मुझे जरा
वक्त सुबह का होने को
ये डर भी सताए मुझे जरा।

तबीब– हकीम

वफ़ा

58) मिलती भी हो अक्सर मुझसे
अजनबीयत अदा तुम्हारी
तेरा वफ़ा करना भी खूब
फिर वक्त बेवकत जफ़ा[1] भी।

दर्द

59) हँसने को मैं हँसता हूँ
हर बात पर यारों के साथ
यार भी हँसते हैं मेरे
नहीं समझते दर्द हँसने के साथ।

जफ़ा– धोखा

यार

60) वो मेरे यार कुछ सोचकर

क्यों अंजान बन गये

मुश्किल लगा वो वक्त

गोया सब काम बन गये।

अदा

61) हमे तो इल्म था जब भी

खैर वो बात नहीं

थी जो बात तेरी अदा में

वो कहीं और नहीं।

दिल

62) दिलकश न मेरी बात थी

जुबां से निकल गई

उनको समझ न आई जरा

और फिदा हो गए।

बात

63) वो भी क्या बात थी
दिल लगे न तेरे बिना
ये भी क्या बात है
दिल लग गया तेरे बिना।

ख्वाब

64) ख्वाब दिन में
आते तो हैं मगर
वो जिंदगी में आए
मुमकिन नहीं मगर।

तहजीब

65) रह जाती है बज़्में खालिश
भूल जाता हूँ मस्त महफ़िल
कैसा मुसाफ़िर हूँ मैं शख़्स
सफर की तहजीब नहीं आती।

इंतज़ार

66) नाउम्मीदी उनके आने की
बरकरार तो रहेगी
खैर फिर भी इस दिल को
इंतज़ार ही रहेगी।

बात

67) कैसे कह देता हूँ मैं
वो बात जो बस बात है
चुप भी रह जाता हूँ
वो बात जो कहने की हो।

अफसाने

68) बनते हुए अफसानों को
चुप कर देता हूँ मैं
सब जिंदगी यूँ गुजर गई
अब पछताता हूँ मैं।

जुर्म

69) हमे तो अपने जुर्म का

इल्म था ही न जरा

वो आए सजा ऐ वक्त

और छुड़ाकर ले गए।

बेवफा

70) बोहत हसीन थे वो बेवफा

हमसे संजीदा उस दौर

बुरा क्या था यूँ जब मिलना

जो होता न था उस दौर।

रास्ते

71) जमाना हमारे साथ था

हम ही ना चले साथ

अब ढूँढते हैं वो रास्ते

कि जिंदगी गुज़र गई।

गुमान

72) तुझे देखकर तेरी अदा हंसी
मुझे वहम–ओ–गुमान हो गया
मंजिल वो ठिकाना रह गया
तेरी तरफ रास्ता हो गया।

हर्फ़

73) मिटने को मिट जाऊँ भी
बेशक हर्फ़े[1] शख़्स मैं नहीं
जो रह जाऐंगे बाकी सभी
दरअसल शख़्सियत वो भी नहीं।

हर्फ़े– शब्दों का

मायूसी

74) कितना मायूस हूँ मैं
हँसने से बाज आता नहीं
जिंदगी बची नहीं जरा
जीने से बाज आता नहीं।

यार

75) वो यार सब ग़मगुसार[1]
दिलकश आवारा मुझ जैसे
कुछ फ़ना हो गए
तो कुछ खफा हो गए।

ग़मगुसार– ग़मों के मारे

दश्त

76) हुए दरख़्त[1] सब खत्म

कि वो दश्त न रहा

करे तूने सर कलम

तेरा मजहब ही न रहा।

ख़लिश

77) थी ख़लिश वक्त को मुझीसे

फ़ितरत अड़ियल थी जरा

मातम मनाया यूँ जमाने ने

क्यूँ ख़ाक में न मिला मैं।

दरख़्त– पेड़

मुकाम

78) कह दिया था मैने कभी
मिलते रहेंगे वहीं कहीं
जमाना भी ढूँढता रहा
मुकाम हमारा कहीं कहीं।

मिसरा

79) रिश्ता न टूटता महबूब से
मैं जब आशिक ही था तबीब[1]
मिसरे से बेजा बेज़ार हुए
वो शेर मुक़म्मिल न सुना।

तबीब– हकीम

कशमकश

80) वो भी मिलना दिलक़श न था,
थी मुलाकात में कुछ कशमकश,
चलो एक बार और सही,
आज़मा लेते हैं वो कशमकश।

मोहतरमा

81) काम तो कुछ आसां न था
फिर भी कामयाब हो गया
जमाने को था कुछ एतराज़
मोहतरमा को रास आ गया।

कूचा

82) मोहब्बते खुशनुमा खूब
था माहौल कूचे में
बस हम ही उस हवा में
बे इश्क़ थे कूचे में।

अहमक

83) मैं भी कह देता यूँ जब
अहमको[1] बाज आओ जरा
न होता गवारा अक्लमंदों को
कोतवाल खफा होता जरा।

जख़्म

84) नज़्म है जख़्मों से मेरे
और जख़्म नज़र नहीं आते
सुनते हैं सब यार मेरे
और फिर नजर नहीं आते।

अहमको– बेवकूफ

तक़ल्लुफ

85) तक़ल्लुफ रोज़ रोज़ मिलना
और मिलने का मन नहीं
सिलसिला कब ये थमेगा
हँसते हुए हँसने का मन नहीं।

पैग़ाम

86) सामना उनसे कुछ ऐसे हुआ
मानों बस गजल छिड़ गई
रुक न सकी कुछ देर तक
पर एक हसी पैग़ाम दे गई।

नाउम्मीदी

87) उम्मीद ही सब कुछ लगे,
वो फितरत भी क्या खूब।
हम बचते रहे मौत से,
नाउम्मीदी से ही बखूब।

इल्म

88) मिले खाक़ में हम मरकर,
जो पहले से ही पता था।
था उनको भी ये इल्म कुछ,
हमें ये न कुछ पता था।

परेशानी

89) वक्त ए हालात भी मुश्किल,
मुखातिब मुझ रहनुमा से,
फ़ितरत भी कुछ बस,
मर्जी ए खुदा अड़ियल जरा यूँ
क्या परेशान हूँ या नहीं,
इल्म जरा बलां परेशानी का
है सबब यही परेशान का,
उस वक्त ए रक़ीब दर सफर

नजरें

90) वो रेशमी परदा ही था,
जो कातिल बना बेवजह
शुकर अब सूकूने खुराक,
के उनकी नजरें इनायत है।

जिंदगी

91) जिंदगी मुसलसल[1] घटती रहे,
दिलचस्प रंगीन बज़्मे नाज़
लंबी रहे अगरचे ख्वाहिश खूब,
बदरंग बेजान रफ़ीके हयात[2]

मुसलसल– लगातार

हयात– जिन्दगी

फितरते नाजनीन

92) ये सब नग्में ये सब बातें
ये ख्यालात ये आशिकाने जज़्बे
ये अदाएं रंगीन और बेकरारी हंसीन
ये तमन्नाएं सब कुछ पाने की
ये फुरसत शायरी में खो जाने की
हुस्नें मोहब्बत में डूब जाने की
मग़रूर हंसीन अदाएं दिखाने की
जलवों से ग़ैरों को तरसाने की
है शिकवा उस वफ़ा-ए-इश्क से
और शिकायत उन मोहब्बतगारों से
न रुस्वां हुए और शिकवे हैं खूब
दावा ये दिल्लगी या है अदा
इलाका भी इनका ज़ख्म इनके दिए
जो फ़ना भी हुए सब इनकी वजह
कहना है इनका ना कुछ इनको मिला

ग़ैरों को कसक बस देते रहें

खुद बयां दर्द–ए–दिल अपना गाते रहें

अब खुदा ही बताए इनको जरा

ये मुमकिन नहीं दसतूर चलता रहे

नहीं इनको खबर वक्त हर खेल का।

मौजूदा हालात

93) वो ज़ौक ज़फर मिर्ज़ा ग़ालिब, था दौर शायरी शहरे हुस्न

फिर बदल गया सब चले गए, कुछ टूट गया ना जुड़ा है अब

साहिर मज़रूह नीरज बोले, इन्हें पेश करें तलत रफ़ी किशोर

बर्मन नौशाद बन धुन के सुर, झूम झूम हसीं देवानंद

करे नृत्य वहीदा चँद्र विभोर, क्या मधुबाला है अनारकली

मीना भी ना कम पाक़ीजा, चले राजकुमार बन नीलकमल

गुरुदत्त दलीप करे सोच विचार, दादा मुनि परेशान जरा

अदा कला की खत्म न हो, नए अदाकार है भीड़ जमा

संघर्ष नहीं गुमान बड़ा, करें दंगल मंगल बेमानी

कुछ भान नहीं मैं खान हूँ वो, सूरत सीरत है माशल्लाह

काले हिरणों की ख़ैर नहीं, फुटपाथ पड़ें हैं डरे हुए
छूटें जेल से बिन जेल गए, टाडा थी पहले हटी हुई
सब जगह यूँ ही कुछ चल रहा, माँगे सब नाचें आज़ादी
नहीं इलम गुलामी इन्हें है क्या, सब झेल रहे इस नाटक को
वक्त है मिलकर जुड़ने का, दें इन सबको हम आजादी
है देश बड़ा ये धर्म कहे, नहीं अलग हमारा कोई टुकड़ा है
सेना हथियार हैं सबल बड़े, बढ़ रहे तिरंगा हाथ लिए
माँ भारत की है शान बड़ी, वंदे मातरम वंदे मातरम।।

ख़राबात

94) पूछों न मंजिल की बात
सफर भी था जरा सुहाना
बस राहबर[1] ही मिलें ऐसे
ख़राबात[2] बन गया ठिकाना।

राहबर– रास्ता दिखाने वाला

ख़राबात– शराब पीने की जगह

अंदाज़

95) है हंसी तू और जवां

बेपरवाह सूलूक मुझसे तेरा

कोई गिला नहीं मुझे जरा

ये भी है एक अंदाज़ तेरा

इंसानीयत

96) खुदा भी अपनी खुदाई से

तफ़रीह[1] पर चला जाता

क्या मजाक है इंसान से

इंसानीयत से जाया नहीं जाता।

तफ़रीह– मौज मस्ती

कांटे

97) कांटे थे चंद जिंदगी में
वो फूल की शक्ल में
मैंने इंतजार किया खूब
वो चुभना ही भूल गये।

आरजू

98) दास्ताँ ऐ जिंदगी मेरी बेमजा,
कि वीरां खिजा भी दिलनशी लगे,
तेरी आरजू तस्सवुर मेरे,
बस ये ही मुझे दिलक़श लगे।

अंजाम

99) तेरी जुस्तजू कि जुनूँ मेरा
अंजाम हो कि हो न हो
बस चल पड़ा हसरत को मैं
पहुंचु न मैं और शाम हो।

इत्तेफाक

100) सफ़र मेरे गुमरही में
मुकद्दर मेरे मिल गयी तू
कैसा हंसी इत्तेफाक था
मैं मुसाफ़िर था भटका हुआ।

आग़ोश

101) वक्त अभी कुछ और है
मुलाकात ऐ ज़ूनून की
घड़ी इंतजार की भी और है
तूफान ऐ हुस्न आग़ोश की।

मलाल

102) न जाने क्यूँ ख्याल न किया
जवानी में महजबीनों[1] का
आज मलाल होता है
कुछ वक्त वो यूँ ही ज़ाया किया।

महजबीनों– खूबसूरत महिला

आशिक

103) आशिक यूँ ही नहीं हूँ तेरा
तू जाने है न जाने जरा
मेले से गुज़रा हूँ उम्रे जवानी
चेहरे और भी थे राह में वहां।

आग

104) तुम भी भुला दो वो बातें
मैं भी भूल जाऊँ वो यादें
कितनी नादान है नसीहत
ये आग बुझाए न बुझे।

दास्ताँ

105) मोहब्बत और तकदीर का
न अर्से से वास्ता
फिर भी मिल जाएं ये दो
तो इश्के कहानी न दास्ताँ

मोहब्बत

106) मुझको बरबाद करके तुमनें
मेरी जिंदगी ही संवार दी
कहेगा जमाने में हर शख़्स
कि ये मोहब्बतें अंजाम था।

गुनाह

107) करूँ हिसाब मेरे गुनाहों का
तस्सवुर में तू आ गई
अब फर्क क्या करूँ मैं
सब बात गुनाह हो गई।

नजाकत

108) ये नजाकत ऐ हुस्न तेरा
मैं कहूँ भी तो क्या कहूं
दिल लगाती भी हो मुझसे
नज़रें मिलाती नहीं क्या कहूँ।

इलाज

109) दर्द ऐ दिल भी खूब है
है इलाज या फिर लाइलाज
वो आये तो सूकून है
फिर चल दिये बे इलाज।

इनायात

110) देखा था ना जलवा मैंने
तेरे हुस्न सा ना कहीं
अब देखता हूँ नज़रें तेरी
इनायात हो वो मुझ पर कहीं।

गुफ्तगु

111) तू मेरी माशूक़ न सही
मैं तेरा आशिक न सही
फिर भी वो गुफ्तगु ऐ मुलाकात
कुछ यूँ ही भूलने वाली नहीं।

दीदार

112) ऐसा तो कोई वक्त न था
किस्मत ऐ दौर भी न था
बस खुदा की रहमत ही थी
मेरे दर पर तेरे दीदार हुए।

जख़्म

113) जख़्म था वो भर गया
वहदत[1] मेरी यादों की खातिर
बदल गयी है फिज़ा मेरी
मुझे जख़्मे जिगर की तलाश है।

वहदत– अकेलापन

ज़ख़्म

114) तुझे देखकर ज़ख़्म ऐ जिगर
भर जाए यूँ ही भरते भरते
वो बात और है कि तू ही है
सबब मुझे ज़ख्मी करते करते।

ग़ैर

115) ग़ैरों पर निगाह न करें
तो आगाज़े[1] गुफ्तगु न हो
ये बदोलत ऐ गुफ्तगु
वो हमसे तक़ल्लुफ न करें।

आगाज़– शुरूआत

मयकदा

116) प्यास थी और होंठ खुश्क

मयकदा[1] भी कुछ खाली न था

बस मेहरबां साक़िया जरा

प्याला मेरा खाली न था।

शराब

117) रस्ता पूछा था मस्जिदें मगर

पर मयकदा छोड़ आया मैं

शेखजी को क्या सूकून है

अब खुदाई ढूंढते हैं शराब में।

मयकदा– शरबखाना

ख्याल

118) रात कटते कटते कट गई
मशगूल था तेरे ख्यालों में
हो गई सुबह कुछ देर से
ख़्वाबों में तेरे उठा था मैं।

शायरी

119) है शायरी तस्सवुर ऐ मज़मून[1]
बयां करे अलफाज इसे
हो दर्द ऐ अंदाज़ गहरा अगर
समझे न कोई हर इसे।

तस्सवुर ऐ मज़मून– शायर की कल्पनाओं का विषय

बात

120) कहने को मैं कहता गया
हाले दिल तुम्हें वो सब
फिर भी रह गयी बात मेरे
वो दिल में जो कहना था सब।

बज़्म

121) निगाहें उनकी मेरी तरफ ही थी,
मरज़ी उनकी कि मतलब न था,
मैं भी वाकिफ था माजरे से खूब,
बज़्म में मुझसे कोई दूसरा न था।

माशूक

122) कसरते आशिकी से माशूक बन गई,
किया नजरअंदाज खफा हो गई,
हुआ रुस्वा मैं आवारा बेकार,
और काम से छुट्टी हो गई।

निगाह

123) निगाहें तेरी मुझपर मेहरबां
न जाने क्या जाहिर कर गया
वो आँखे तेरी या कज़ा[1] मेरी
देखते देखते पशेमां[2] हो गयी।

याद

124) मरना भी था सो मर गया
अपनों ने भी तकल्लुफात कर दिया,
सब चल दिये फिर इधर-उधर,
न कोई बात मेरी न कोई याद मेरी।

कज़ा- मौत
पशेमां- शर्मिन्दा

शरारत

125) क्या समझूं खुद को जरा

तू ही जाने शराफत मेरी

आशिक न था फितरत से

तेरी निगाहों ने सिखा दी शरारत मुझे।

बदनामी

126) क्या जिंदगी उन लोगों की

न बदनाम हैं न परेशानी

खुदा का बड़ा शुकर है

बख्शी मुझे परेशान बदनामी।

चेहरा

127) क्या कहूँ तुझसे तेरी आदत,

वाकई मुसल्लम[1] है इश्क़ में मेरे,

मुझे ही कुछ भूल जाने की,

न निकले जहन से चेहरा तेरा।

मुसल्लम– पूरी तरह

कसक

128) रहनुमाई तेरी कुछ दूर तक

एक धड़कन सी दे गई

कसक दिल में रह गई

मेरी नफ़स[1] तुझ में रह गई।

बेवफ़ाई

129) तेरी हरकतें और बेवफ़ाई

मुझे रिफ़ाकते[2] रंग बताये

तुझे कुछ न बता सका मैं

और शुक्रिया कहता गया।

नफ़स– सांस
रिफ़ाकते– बेवफा

दीवानगी

130) तू भी मसरूफ[1] मस्त जवानी में,
सामने तेरे तूने न देखा,
मैं भी खोया बेबस दीवानगी में,
सामने तू और मैंने न देखा।

जिंदगी

131) मौत भी कुछ ऐसी है
मरने को कहते हैं जिसे लोग
जान ले जिंदगी को जरा
इसको भी मरना कहते हैं लोग।

मसरूफ– व्यस्त

अदा

132) तेरी अदा में नखरा और गुस्सा,

है ये ख्याल मुझे माफिक जरा,

मझें भी समझने को सब नहीं,

इस ख्याल से बज़्म में आता हूँ जरा।

तलब

133) मयकदे सब बंद हैं आज,

वो बंदानवाज गुजरा था आज,

तलब कल थी वो अब भी है आज,

सफर रात तक करना है आज।

दीदार

134) निकला तो वो बस चाँद था

वक्ते दिन उस गली में

दीदार मुझे कुछ यूँ हुए

नज़र आता नहीं वो गली में।

ख्वाहिश

135) बहुत कुछ जिंदगी में मुझे
मुशक्कते मशगूल[1] बाकी है
वो ख्वाहिशे हसरतें तुझे
मेरे बहुत से आलाम[2] बाकी है।

महफ़िल

136) तेरी महफ़िल में आने को
फिर आ गया हूँ मैं
बस ख्याल था जहन में
कि कहीं जा रहा हूँ मैं।

मशगूल– व्यस्त रहना
आलाम– ढंग

गुनहगार

137) क्यूँ जमाना सब गुनाहों को
ऐब बेज़ा मज़मून[1] माने वो
अर्से से एक लम्बा सफर
मुझ गुनहगार को उस्ताद मानें।

आशिकी

138) होने को क्या इस जमाने में
कोई वारदात रह गयी नहीं
फिर मुझे ही मयस्सर[2] क्यों
जुर्मेआशिकी में शामिल नहीं।

मज़मून– विषय
मयस्सर– किस्मत में

खता

139) खता मेरी कुछ फरक है
कि तुझसे खता न कर सका
रब्तदार[1] रहा तेरा उम्रभर
पर तुझ से रिश्ता न बना सका।

हकीकत

140) मुझे पता था बख़ूब ये
कि आख़िर मैं मर जाऊँगा
फिर मेरे अपने रो रोकर
असलियत में सब जी जाएंगे।

रब्तदार– रिश्तेदार

मुश्किल

141) जिंदगी को छोड़ना भी बेवकूफी,
जीना है इसको चाहे मुश्किल,
क्यूँ मुसलसल[1] गुनाह हमारे,
बात न करें उनकी तो भी मुश्किल।

साक़ी

142) वो मयकदा वो साक़ीया
क्या कुछ अजीब नहीं
खुलता भी है कुछ देर से
फिर साक़ीया का पता नहीं।

मुसलसल– निरंतर

रवायत

143) ये इश्क मोहब्बत है फसाद

रवायत[1] है चलती रुकती नहीं

मैं न भी करूँ सबब से

आशिक हूँ वो कि वजह नहीं।

ख्याल

144) तेरा ख्याल कुछ यादों का असीर[2],

इश्क नहीं आशिक भी नहीं,

क्यूँ फंसा हूँ रिफ़ाकते[3] बेरूझान में,

शायद तू भी मुझसे जुदा नहीं।

रवायत– परंपरा

असीर– कैदी

रिफ़ाकते– साथी (साथ रहना)

ज़माना

145) वो सब शागिर्द थे मेरे

आशिकी भी की नसीहतें मेरी

अब ज़माना है बस उनका

मुझे समझाते हैं बात मेरी।

गुफ्तगु

146) शिक़वा किया शायद गलत किया,

मुझको पशेमान होना ही था,

गुफ्तगु में वो बात न हो सकी,

जो हो सकी वो मुद्दा न था।

दास्ताँ

147) गुज़री दास्ताँ सुना रहा हूँ,

शायद कोई गम छुपा रहा हूँ,

मेरे थे जो अब गैर के हैं,

वो अफसाने कुछ छुपा रहा हूँ।

वफ़ा

148) वफ़ा तो की,
न करता कैसे,
था लाजमी फितरते इश्क मेरा,
तू भी लैला न हुई मेरी,
खामखाँ कैस[1] बन गया तेरा।

चाहबर

149) शराब अभी प्याले में बाकी है,
मुझको भी प्यास अभी बाकी है,
मैं ही मुशक्कतगाह[2] में नहीं,
और भी चाहबर[3] यहाँ बाकी हैं।

कैस– मजनूं का नाम
मुशक्कतगाह– पाने की भीड़ में
चाहबर–

बेबसी

150) वो मेरे बस की बात न थी
देखूं न तुझे कुछ गौर से
फिर तेरी भी कुछ बेबसी थी
देखती रही मुझे दूर से।

बदनाम

151) फ़हरिस्ते ऐबों से बदनाम हूँ
मैक़श नहीं पर बदनाम हूँ
तफ़रीह[1] तुझसे न कर सका
पर तेरी आशिकी में बदनाम हूँ।

तफ़रीह– मौज मस्ती

दर्द

152) क्या अजीबोगरीब हकीकत है ये,
लगता है कुछ है और है भी नहीं,
दर्द सीने में उठता है मगर,
दर्द सीने में होता नहीं ।

जिंदगी

153) जिंदगी बदस्तूर गुज़र रही
कुछ नया नहीं खास नहीं
सोचता हूँ तू ही आ जाए
क्या पता वो भी खास नहीं।

फ़ुर्सत

154) एक ग़फ़लत सी खत्म हो गई,
फ़ुर्सत से नफ़रत हो गई,
इश्क भी क्या जरूरी है,
करीबी तुझसे शुरू हो गई।

जाम

155) जाम पर जाम पिये जा रहा हूँ
सोचते सोचते खाली हुए जा रहा हूँ,
दिल भी लगता है लगता नहीं,
बस तेरा ही ख्याल किये जा रहा हूँ।

मुश्किल

156) बड़ी मुश्किल सी बात है
न गुजरू तेरी गली से है
ये तकलीफे हकीकत
हो न दीदार तेरा तेरी गली से।

महजबीन

157) रुकी मुलाकात अजनबी सी
अंजान बला थी महजबीन[1]
क्यूँ लगे सब कुछ अपना सा
तजस्सुमे[2] पैग़ाम भी फिजा में।

बेवफाई

158) अब क्या गिला बेवफाई का
आग़ाजे मोहब्बत मैंने ही की थी
वो बात और तेरी तरफ़ से
शोला ऐ आग तूने ही लगाई थी।

महजबीन– खूबसूरत महिला
तजस्सुमे– मुस्कराहट

रवायत

159) नियाज[1] वक्त के साथ उम्रे
कहने को सब बदल जाते हैं
रवायत नहीं अंजानी हमसे
क्यूँ इश्क में सब वैसे ही रह जाते हैं।

ख़लिश

160) ख़लिश तुझसे मुझे बज़ाहिर[2] सी,
सिलसिला सा चला कुछ चलने का,
न जाने तूने क्या कर डाला,
ख़लिश अब है कि ख़लिश नहीं।

नियाज– इच्छा
बज़ाहिर– स्पष्ट

रिश्ता

161) ख़राबात[1] वो मेरी पसंद का
रस्ता ऐ सफर यूँ आया
फिर महक तेरे ख्यालों की
रिफाकते रिश्ता याद आया।

मुलाकात

162) हर एक याद पुरानी होती है
हर एक बात नयी होती है
मुलाकातें भी मिलते मिलते
कहने को मोहब्बत होती है।

ख़राबात– शराबखाना

सवाल

163) जब कभी तेरा ख्याल आता है
सवाल पर सवाल आता है
तुझे दिलनशी से मतलब था
मुझे खुद पर मलाल आता है।

कसूर

164) नजाकत में तेरी कुछ कशिश है जरा,
मेरा भी कसूर है नाजुक जरा,
अंजान न बन यूँ इस तरह,
तुझे सिर्फ मेरी ही तलब है जरा।

मजमा

165) मरने वाले तो चले गए
बेबस थे जाने की जल्दी में
उनके ही आशियाने पर
मजमा ऐ सवाल जीने वालो में।

मुहब्बत

166) क्या समझूं ध्यान से अपने
बारीकिया मोहब्बतें बदनाम
हाँ फिर भी मुझे कुछ
याद आते हैं यारों के नाम।

बहकना

167) दिल है खाली ख्यालों से
फिर क्यों सोच रहा हूँ मैं
जाम नहीं सुबूं में जरा
फिर क्यों बहक रहा हूँ मैं।

सवाल

168) है रंजिशें और है भी नहीं
गुजरे हुए तेरे सूलूक पर लेकिन
न जाने मेरे दिल में हरबार
तेरे इश्क पर सवाल आता है।

कूंचा ऐ यार

169) कौन बख्शे मुझे सुकूने चैन
कौन सफर करे तय फिरदौस[1]
सफर दूर है जन्नत जाने में
मुझे माफ़िक है रस्ता कूंचा ऐ यार[2]।

अदा

170) मुझे इजाज़त न मिली तेरी
तुझसे ख्वाबों में मिलने की
है अजब अदा भी क्या तेरी
यूँही मुझसे रोज मिलने की।

फिरदौस- स्वर्ग
कूंचा ऐ यार- माशूक की गली

शुभा

171) ख़स्तगी मेरी खुदा ऐ रहमत
क्यूँ फिर जायजा लेना पड़ा
वो जायज़ था शुभा मेरा
तेरा अंदाज जो आशिकाना था।

जिंदगी

172) मैं हंसी खुद को क्या कहूं
सब हुस्न मेरी आग़ोश में
मुक़ामे मंजिल से न वास्ता
मेरी जिंदगी मेरा सफर है।

वहशत कश

173) मुझको तो हमेशा घुटन मिली

तुझे पता चले या न चले

वहशतकशे[1] मेरी फितरत नहीं

वहदतकशे[2] मेरे साथ चले।

राह

174) हालात मेरे कुछ ठहर गये,

मेरे दिल को अकेला छोड़ गए,

मेरी सब्र को समझ में आता है,

वो मयस्सर है मुड़ती राह पर।

वहशतकशे– अकेलेपन से घबराना

वहदतकशे– अकेलापन

इश्क़

175) इश्क़ भी रहमत है खूब

इश्क़ भी शामत है बखूब

वफ़ा इसकी मजनूँ बना दे

जफ़ा इसकी बंदा बना दे।

अंजाम

176) इश्क़ भी बदनाम न हो तो

फिर इश्क़ क्या आबाद होगा

कहने को ये एक फसाना

इसका कोई अंजाम न होगा।

गुफ्तगु

177) ऐसी तो कोई बात नहीं

मुझे इश्क़े गुफ्तगु न आती हो

तुझे देख मैं जी भर लूं

फिर जिंदगी भर की बातें हैं।

उल्फ़त

178) मज़ार पर मेरे आ ही गए
तो गौर कर रुककर जरा
क्या जरूरत थी चंद लमहों की
जो असलियत में उल्फ़त[1] के न थे।

रुस्वा

179) मैं कुछ बेहया[2] तो न था
तेरी हरकतें अदा भी दिलनशी
रुस्वा हुआ कुछ ऐसा
कि तुम्हारा दिल ही आ गया।

उल्फ़त– मोहब्बत की पहली अवस्था
बेहया– बेशर्म

फ़िजा

180) घटाएँ छाई हैं गुज़रने को
मिलने आई हो चले जाने को
क्यूँ मैं बेवजूह[1] हसरत में
फ़िजा है जल्दी चले जाने को।

सफर

181) दुनिया में आया
एक सफर कटने को काफी कट गया
कुछ पता नहीं हमसफर का
पर सफर काफी छूट गया।

बेवजूह– बिना कारण

बेकारी

182) अस्ले हयात[1] मैं समझता रहा

तसव्वुफ़े[2] शख्स बनता गया

बदनीयत हालात होते रहे

बस यूँही मैं बेकार होता गया।

तहजीब

183) हुस्न कोई मजहब नहीं जहां

है तू हंसीन क्यों लाजवाब

इश्क़ भी तहजीब का हमसफर

क्यूँ न हम दोनों फिर हमसफर।

हयात– जीवन

तसव्वुफ़े– आध्यात्म

मशग़ला

184) मशग़ला[1] तेरे साथ खूब चला
वक्त भी दिलक़श वो गुज़रा
तमहीद[2] इश्क़ की बनती रही
गोया इश्क़ मुकाम से न गुजरा।

तमाशा

185) मैं मायूस हूँ अपने ग़म से
मेरे यार तुझे क्यों शुभा है
चाहे जिंदगी है मस्ते बहार
सच कहूँ तो ये तमाशा है।

मशग़ला– गुफ्तगू
तमहीद– भूमिका

मकसद

186) जिंदगी के मायने है क्या
ताल्लुक नहीं जीने से इसका
जो फना हो गये जीते जी
बता गये सब मकसद इसका।

दर्द

187) बुझते ही आग दिल में
होता है आगाज़ एक दर्द का
जैसे मज़ार पर हो चराग
एक बुझता तो दूसरा जलता।

दीवाना

188) मेरी बेक़रारी भी बेकार गई
आबाद भी खूब बेज़ार हुआ
इश्क़े माहिर आशिक न हुआ
तेरा दीवाना बनकर रह गया।

मयकदा

189) सब रंगते उम्र निबट गई
गुरूरे इश्क़ भी जाता रहा
खुमार सब चला जाएगा
कुछ आगे मयकदा है जरा।

मेहरबां

190) मैं तो जिंदगी जी लूं और
शुभा है ये मुझसे खुश नहीं
अब तू ही मेरा साथ दे दे
क्या तू भी कुछ मेहरबां नहीं।

ख़लवत

191) ख़िज़ा ऐ ख़लवत[1] की दिलक़शी
से इतना न मुँह मोड़
काम आयेगी तेरी ज़ीस्त में
तुझे करीब लाने को तेरे साथ।

फैसला

192) तुम जाम सुबु[2] से देते रहो
मैं खुद ही फैसला कर लूंगा
ये वक्त नहीं ग़म पीने का
हूँ गम और दर्द का हमसफर।

ख़लवत– अकेलापन
सुबुं– शराब का जग

आशिकी

193) अजीब हंसी है तेरी आशिकी
हवा फ़िज़ा की कुछ भी नहीं
सुकूं मिला वो तेरी गुफ्तगु
मैं बात किसी से करता नहीं।

कयामत

194) निगाहें तेरी क्या माशाल्लाह
मिलती नहीं मेरी नज़रों से
मिलती भी है जल्दी में वो
ठहर जाये तो कयामत है।

बुखार

195) खुशबु जिस्म ऐ माशुका
मुझे बुखार चढ़ गया
और ऐसे ही मैं तबीब
खुद बीमार हो गया।

इजहार

196) अजीब सूरतें हाल इश्क़ की
मेहमां हूँ मेहमांनवाज़ी नहीं
बेशक ये वक्त गुज़र जाएगा
इजहारे गुनाह जब हो जाएगा।

यार

197) यारी के रंग हैं बहुत
जोश है तो गम भी बोहत
हैं यार मर मिटने वाले
तो यार हैं जान लेने को बोहत।

डर

198) ये रात के साये डसने वाले
खौफ़ नहीं क्यूँ मुझे जरा
वक्त सुबह का होने को
ये डर भी सताए मुझे जरा।

तर्जुमा

199) बातें उनकी लाजवाब
तर्जुमा[1] मुख्तलिफ[2] बात का
मैं बात उनकी समझूं जरा
वो जायका ले मेरी समझ का।

दौर

200) मर गए हम अदा पर
मर गया इलाका भी यूहीं
दौर ये रुकता नहीं और
कहते हैं यहाँ कातिल नहीं।

तर्जुमा– बखान
मुख्तलिफ– अलग

सफर

201) वो रईसीयत मेरे ख्यालों की
मुफलिसी[1] भी हालातों की
मुझे रोकती हैं आवाज़े सभी
बस सफर मेरा बरकरार है।

जाम

202) उनकी नजाकत उनकी अक़ीदत[2]
सबब[3] नहीं फिर उठने का
जाम रखा था पीने को
नहीं हाथ उठा उसे पीने को।

मुफलिसी– बखान
अक़ीदत– सम्मान, इज्जत
सबब– कारण

राहबर

203) न मंजिल की तलाश है
न मुकाम की फिकर
फिर कैसा ये राहबर है
ग़मे रोजगार दिला गया।

शराब

204) खिजा भी खूब बदमिजाज
नुक्कड़ पर है मयकदा
ख़लवत मुझे ले जाए कहाँ
वो दश्त[1] हो याकि शराब।

दश्त– जंगल

तवज्जों

205) मुझे मिलते हुए अपने से
तमाम जिंदगी गुज़र गई
जाना हूँ मैं ग़ैरों को जो
वो तवज्जों[1] खुद पे न गई।

कांटे

206) गुज़रे हुए वक्त में मेरे
बस कांटे ही कांटे थे
मुख्तलिफ न थे अपनो से
वो जो कुछ गैर भी थे।

तवज्जों– केन्द्रित होना

बहाना

207) मुनासिब तो न था मेरा
तेरे घर उस दिन आना
बहाना था मुक़म्मिल मेरा
फिर तेरा घर रुके रहना।

शराब

208) आदत भी बेसबब खुद में
जरूरत नहीं समझने की
शराब है बाकी सुबुं में
जहमत नहीं समझने की।

जफ़ा

209) वक्त मुझसे है नहीं
ग़मे हालात भी है बेअसर
वो जफ़ाऐ तेरी याद आए
यही जिंदगी की सांस है।

जीवनशाला

210) होश नहीं जिस नशे में मैं
बेमानी लुत्फ में डूब गया
जीवनशाला है मयख़ाना
पीने का मकसद भूल गया।

बात

211) देखकर तुझे लगता है मुझे
मिला था तुझसे कभी पहले
और भी कुछ तू ही जाने
वो बात और है तू न माने।

गिला

212) मुझको मेरी खता पर
क्यों गिला हो बेवजह
बेहया मेरा इज़हारे इश्क़
तुझे भा गया हूज़ूर।

ज़हमत

213) बड़ी ज़हमते[1] जमाने की

मेरा रोज़गार बन गई

मैं तो वाक़ई में आशिक था

तुझे क्या बात ख़ल गई।

इन्क़लाब

214) कितने मुकम्मल थे तुम

सिर्फ ख्वाबों के सहारे

मेरी जिंदगी रही अधूरी

फक़त इन्क़लाबों के सहारे।

ज़हमते– मुशीबतें, परेशानियाँ

हया

215) ये कैसी नीची निगाहें

बस देख लो हमें एक ही बार

हया वो शरमाना भी

दिखाना जमाने को बार बार।

इलाका

216) कितनी हंसीन थी जान

कि इलाका ही लुट गया

मैं ही था जरा नादान

वक्त यूँही निकल।

आग

217) ये भी क्या बात है

देखा न तुमने मुझे कभी

आग दिल में मेरे

तुम्हें पता लगें तो सही।

मकसद

218) जिंदगी के मायने है क्या

ताल्लुक नहीं जीने से इसका

जो फ़ना हो गये जीते जी

बता गये सब मकसद इसका।

अहसास

219) बड़ा अजीब सा नशा है

इस कायनात ऐ शराब में

मिलते हैं ग़ैरों से भी हम

अहसास अपनों का सा ही।

आवारगी

220) क्यों है आवारा दिल इतना

हसरत नहीं जिगर में मेरे

वो रहते कंहा मालूम नहीं

फिर क्यूँ रहते हैं दिल में मेरे।

बहाना

221) मेरी किस्मत बड़ा जिगरा
सैलाबे ग़म कि थमता नहीं
कुछ बहाना बनी जिंदगी
और मेरी गुज़र भी होती गयी।

जिक्र

222) हैं खफा भी मुझसे बोहत
फिर तस्दीक़े[1] जिक्र से बचे
तेरी फितरत भी ये हंसी
मेरी तवज्जों से न बचें।

तस्दीक़े- पुष्टि

फसाना

223) फिर वही छेड़ा फसाना
मोहब्बतें गुज़रे जमाने का
पहले ही मायूस थे हम
दिल किया फिर रोने का।

ग़म

224) मेरा भी वक्त ऐ दौर
ग़मे दरिया से गुज़रा है
सफ़र में मिल गये तुम
वरना मर गया होता।

नाइंसाफ़ी

225) उन्हें भी ख्वाब आते होंगे
रहते होंगे मशगूल मुझसे
कितनी नाइंसाफ़ी है ये
उनका यूँ मिलना मुझसे।

तन्हा

226) मैं घबराया हुआ था कुछ
जरा रहते रहते हुए तन्हा
फिर मिले मुझको हमनंवा[1]
जो अपने में थे सब तन्हा।

हसरत

227) वो ज़हर भी देते हैं
बड़े ऐतिहात से मुझे जरा
ख़बर उनकों शायद नहीं
जीने की हसरत नहीं जरा।

हमनंवा– सहचर

आबादी

228) रोकिए इस आबादी को
आबाद होने से जरा
रहती है दिल में मेरे
एक आबादीजान महफ़ूज जरा।

ज़िद

229) अपनी ही हर बात पर
तुम ज़िद न किया करों
अटकती हो जब सवाल पर
फिर मुस्कराया न करों।

दास्ताँ

230) जिद भी है बेक़स भी मैं
समझो न समझो मेरी बात
चंद वाक़यात मेरे ही थे
वो सबब सब तेरी दास्ताँ।

दर्द

231) हकीकत मेरी भी क्या
न दास्ताँ न किस्सा कोई
फक़त मेरा दर्दें जिगर
उसका भी न बयां कोई।

पहचान

232) मुझको अजनबी मानकर
असल में तुमने पहचान लिया
जानता हूँ मैं अदा ये खूब
कि तुमने अपना मान लिया।

यारी

233) यारी भी खूब अनजानी सी
वक्त कैसे गुज़र गया
फायदा नहीं अफसोस का
जो वक्त यूँ गुज़र गया।

मज़मून

234) वो किताबें मैंने भी पढ़ी
पढ़ाया जमाने को भी खूब
पीछे रह गया उनसे मैं
जो पढ़ न सके कोई मज़मून।

फ़नकार

235) खुद रहते हैं मसरूफ
लोग बेवजह यूँ ही
ये भी क्या अंदाज़ है
फ़नकार बनने का यूँही।

उल्फ़त

236) कितनी हैरत में हो तुम
मैं चुपचाप सोचता हूँ
उल्फ़त जो दिल में है
कहीं वो ख़बर तो न हुई।

दर्दे दिल

237) ऐसी हसरत तो न थी
मगर दर्दे दिल ले बैठे
उन्हें भी क्या जरूरत थी
सफ़र में साथ मेरे बैठे।

फैसला

238) वो जैसे पेश आए
इश्क़ का अहसास हुआ
किस्मत कुछ ऐसी थी
कि आगे फैसला न हुआ।

नकाब

239) निगाहों को है जो तजस्सुम[1]
शय वो खुद ब खुद ख़ास हो
जब नकाब तूने बेपर्दा किया
सैलाबे शबाब में बह।

बात

240) ऐ जिंदगी तुझे चाहा मैंने
कुछ न मिला कोई बात नहीं
गुज़र जाए आगे भी ऐसे
मैं समझ लूंगा कोई बात नहीं।

तजस्सुम– तलाश

नाकामी

241) बड़ी नाकामियों से वास्ता
हमारा भी रहा जिंदगी भर
ये वज़हात भी अहम् है
हम कामयाब हैं आख़िरश[1]।

सफ़र

242) सफ़र मंजिल ब मंजिल
मेरा जिंदगी भर रहा
रुक न सका मंजिल पर
सफर में मशगूल रहा।

आख़िरश– आखिरकार

शहर

243) ये शहर की गर्द भी

सफ़र ऐ सांस मुसाफ़िर है

परेशां है सारा शहर

मुझे आदत सी हो गई है।

दस्तूर

244) मुजरिम हूँ गुनाह भी किया

जमाने ने मुझको रुस्वा दिया

बड़े नादां हैं वो शरीफ़

समझे न दस्तूर जमाने का।

बहकना

245) कहने को सो रही है तू

आँखों में हरकत शरीर

ये देखकर नज़ारा नशीं

बहक न जाऊँ मैं कहीं।

कांटे

246) गुज़रे हुए वक्त में मेरे

बस कांटे ही कांटे थे

मुख्तलिफ न थे अपनो से

वो जो कुछ गैर भी थे।

इत्तेफाक

247) बोहत कुछ कहा था जब

तुझे दिलक़श लगा भी खूब

बड़ा अजीब इत्तेफाक था

खोया था मैं खुदी में खूब।

ज़ाया

248) वो किताबें तुम्हारी अलमारी से

मैं पढ़ता पढ़ता मशगूल रहा

तुमनें देखा न देखा मैंने

वक्त किताबों में ज़ाया हुआ।

शय

249) जमाना हँसता है मुझपर

वो हालत मेरी जैसी है

जुनूँ भी कम न हो मेरा

तू शय ही कुछ ऐसी है।

मंजर

250) वो मेरी बरबादी ऐ मंजर

वक्त से सभी गुज़र जाएगा

जो रह जाएगा वजूद मेरा

मसअला ये कि वो कहाँ जाएगा।

इत्तेफाक

251) बड़ा अजीब सा इत्तेफाक था

कि वो गली छोड़ चुके थे

हमनें समझा खफा हमसे हुए

या रब वो दुनिया छोड़ चुके थे।

मशहूर

252) जनाजा उनकी गली से उठा

तो आख़िर मशहूर हुए हम

ये राज हमारे ही दिल में था

कि उनके करीब न हुए हम।

शोहरत

253) शोहरत भी खुद ब खुद

बिकती है सरे बाज़ार में

कीमत में भी उछाल है

गाहक कम नहीं बाजार में।

बरबादी

254) मैं क्या ज़िक्र करूँ अब

तुमसे दास्ताँ ऐ बरबादी मेरी

बस यूँही समझ लीजिये

किस्मत ही थी ऐसी मेरी।

कारवां

255) जरूरी नहीं कि कारवां

पहुँचे सदा जानिबे-मंजिल[1]

वो मैं बेकार बरबाद ही

फ़ना होगया जानिबे-मंजिल।

अफसाना

256) कैसे कह दूँ तन्हा हूँ

मैं दर्द जिगर में साथ है

सब राहबर मुझसे दूर हैं

अफसाने मेरे साथ हैं।

जानिबे-मंजिल- तय मंजिल

वहम

257) आवाज़ सी आती थी मुझे
सन्नाटे में लगातार
वहम भी कुछ लाजिम था
दिल धड़कता था बार बार।

इक्तराब

258) ये इक्तराबे तेवर तेरे
कहता है दिल मेरा फक़त
न हो कोई और वज़ह
वज़हात हम ही हो फक़त।

तकाजा

259) अब भी तकाजा है मेरा
कि तुम मिलते रहो यूँही
खूब आता है तुम्हें
मना करके मिलना यूँही।

शख़्सियत

260) यारब हुस्न ने उस वक्त
शख़्सियतों में नवाज़ा मुझे
वो तहजीबे फ़नकारी थी
उन्होंने ही ये सिखाया मुझे।

तलाश

261) अपने भी तलाशे नहीं जाते
चले जाते हैं फिर आ जाते
रह जाते फिर हम ही तन्हा
जो ग़ैर हमसे मिलने न आते।

उल्फ़त

262) उनको एतबार भी मुझपर
तारीफ करूं है वो भी कम
तमाम जिंदगी किया मुझसे
न समझे जरा उल्फ़ते ग़म।

बेचैन

263) नींद है कि आती नहीं
याद वो भी जाती नहीं
दिल ऐसा बेचैन नहीं
क्यूँ रात ये जाती नहीं।

हमदर्द

264) हैं हमदर्द मेरे दर्द के
जिंदगी भी गुज़र रही है
मिलता नहीं है सुकूं
मुझे अदाकारी आ रही है।

गुमान

265) मुफलिसी[1] का भी क्या कहूँ
हूँ रहीस बड़ा गुमान से
कहने को उनसे कह ही दूं
बात निकलती नहीं जुबां से।

परेशानी

266) परेशानी तो है मगर
फिर भी इतना परेशां नहीं
मुझे ही कुछ क्यों नहीं
वो इतने आराम से नहीं।

मुफलिसी– गरीबी

आवारगी

267) निगाहें मेरी ऐसी तो आवारा न थी
जो तुम ख़फा हो गई
न जाने फिर क्या हुआ कि
तुम मुझपर फिदा हो गई।

ख़लवत

268) ख़लवत में वक्त गुज़रा
तुम भी न थे मेरे साथ
अब आए हो कहने फक़त
कि रहोगे न मेरे साथ।

बज़्म

269) निग़ाहे तीर उनके बज़्म में
चलते रहे बार बार
मुझे सिफत[1] ऐसी न थी
फिर भी देखता रहा बार बार।

आवारगी

270) आशिकी बस एक आवारगी
है जुबां ये अक्लमंदों की
गुजर जाए जिंदगी तमाम
तब समझे हैं ये आवारगी।

सिफत– हुनर, काबलियत

बरबादी

271) बरबादी ऐ इश्क़ जरूरी है
बनिस्बत[1] इश्क़े कामयाबी से
दिलक़श रास्ते जो हैं टेढ़े
है सफर बेजार सीधे राहों से।

तस्सवुर

272) तस्सवुर में वो मेरे
दीदारे नज़राना दे गये
जाने कहाँ चले गए
मेरी नींद भी ले गये।

बनिस्बत– उसके मुकाबले

ज़िंदगी

273) बशर[1] तू लगा रहता है

दिल्लगी जुस्तजू ऐ जुनूँ

जानता भी खूब है

फ़ानी तेरी ज़िंदगी ऐ फ़ुसू[2]।

आसार

274) वक्ते इंतिजार खत्म समझो

ऐसा कुछ आसार कहते हैं

अज़ीज़ मेरे ग़ाफ़िला[3] समझो

जाने के मेरे आसार कहते हैं।

बशर– इंसान

फ़ुसू– जादू

ग़ाफ़िलां– मूर्ख

ख्याल

275) क्यूँ मिल जाते हैं मेरे ख्याल
वो अंदाज़ बदलें हकीकत में
मैंने तो सोचा रात को यूँही
सुबह छपजाते हैं अखबार में।

फ़साद

276) ख़ौफ़े अंजाम से घबरा जाता हूँ
क्यूँ फ़साद ऐसे ले लेता हूँ
हैरत में सब फितरत से मेरी
गुबारे राह को हमसफ़र बना लेता हूँ।

गुरबत– गरीबी

ऐश

277) क्या ग़म सहे जमाने के दिये
और हम भी कम न थे
वो जिंदगी गुरबत[1] मेरी
किसी ऐश से कम न थी।

ग़म

278) मैं ग़म से घबराता नहीं
दर्दे जिगर से रोता नहीं
कैसे बताऊँ मैं तुमको
हकीकत में ये होता नहीं।

माशूक

279) मोहब्बत उनकी थी बेदाग़

और बेवफ़ा माशूक ने मारा

मुझे मयस्सर न थी जफ़ा

और माशूक़ के प्यार ने मारा।

दौर ऐ मोहब्बत

280) वो आशिकी दौर ऐ मोहब्बत

मशगूल रहा जिंदगी भर

क्या कहूँ उनकी मगर

उजड़ते रहे जो जिंदगी भर।

शय

281) मुझे तो ग़ैरत थी कुछ

कि उसकी शराब छोड़ दी

हैरत में थी तलब मेरी

कि मैंने वो शय क्यों छोड़ दी।

मशगूल

282) जिदंगी भी क्या रंगीन गुज़री

मैं भी तनहा रहा खूब

तूने भी न देखा इस तरफ

मुझमें मशगूल रही खूब।

दिल

283) जो दिल में कुछ रह गया

वो दिल में रहे तो अच्छा

तमन्ना कि तुझसे कह दूँ

ग़र न कहूँ तो अच्छा।

जज़्बात

284) है जुनूँ मुझे कि क़ौमपरस्त

या मैं दूर इन मामलातों से

है जमा हूज़ूम मेरे चारो तरफ

जो दूर है सब जज़्बातो से।

जुबां

285) वो आएँगे बाद मेरे

ढूंढेंगे सब लफ्ज़े जुबां

न समझे हैं आज कुछ भी

समझेंगे उस दिन जुबां मेरी।

महजबीन

286) वक्त गुज़रा महजबीनों में

काम भी तमाम करने पड़े

सवाल फिर भी वहीं का वहीं

क्यों जिंदगी में नाकाम रहे।

जज़्बात

287) मेरा तअल्लुक़ है जज़्बे से

बहरहाल मैं समझता नहीं

वो क्या है कि तुम भी जरा

जज़्बात को समझती नहीं।

ख्याल

288) जल्दी से अपने कंधों पर
मेरे मुकाम पर ले आए
मिलूंगा मैं तुमसे अब कब
ख्याल दिल में मेरे आए।

जुस्तजू

289) जुस्तजू कामयाब हुई
मगर दिल को चैन कहाँ
सवाल ज़हन में है
कि ये सब कैसे हुआ।

वायदा

290) वायदा भी उनकी बातों का
हकीकत में पूरा होता नहीं
वो नादान उन्हें झूठा कहे
गुफ्तगु ऐ अंदाज़ पता नहीं।

अंदाज़

291) ना कोई फुर्सत में है
ना जरूरत हसरतें अंदाज़
सब कुछ ठीक चले है
मुझे अधूरा लगे शहरे अंदाज़।

आदत

292) मुझे भी आदत है खूब
खो जाने की खुद से जरा
वो आए हैं मिलने अभी
कैसे ढूंढू कि उनसे मिलूं जरा।

सफ़र

293) सफ़र में मिल जाए कोई
तमन्ना लिए उस राह चले
न मिले वो तो मगर
आशिक तमाम उस राह मिले।

फसाने

294) फसाने और अफ़साने बोहत
हुए मेरे गुज़रे वक्त में
जमाने ने दिया वो सब कुछ
जो न ले सका मैं वक्त में।

खुरक

295) आफतें ग़म कुछ कम नहीं
जिंदगी भी ठहरती नहीं
मुश्किलांते भी कम नहीं
मेरी खुरक भी थमती नहीं।

खामोशी

296) खामोशी मेरी उस वक्त
अपनी ही एक आवाज थी
मर्जी उनकी उस वक्त
मेरी खामोशी के साथ थी।

बात

297) चलता तो मैं भी हूँ
औरों की तरह उनके साथ
कदम भी मिलते हैं खूब
बात नहीं होती उनके साथ।

रग़बत

298) वो लगते हैं बेवफ़ा मुझको
जरा इब्तेदा[1] है अभी सफ़र
रंग लाऐगी रग़बत[2] भी उनकी
जो होगा मेरा नशेमन[3] असर।

इब्तेदा– शुरूआत
रग़बत– लगाव
नशेमन– आशियाना, घोंसला

आवारा

299) हम भी निकले थे शहर में
एक जिम्मेदार की तरह
इत्तेफ़ाक़न जो तुमसे मिले
बदनाम हुए आवारा की तरह।

गूरुर

300) उनकों गूरुर न उनसा कोई
मुझको गूरुर न मुझसा कोई
वजह ये खुद ब खुद है सही
है वो कहीं और हूँ मैं कहीं।

जिंदगी

301) मैं भी तेरे साथ रहा
तमाम उम्रभर ऐ जिंदगी
दरबदर भटकता रहा
हकीकत से महरूम[1] मैं जिन्दगी।

जमाना

302) बदल गया जमाना है अब
बदल गये आशिक हैं सब
करें हैं आशिकी दिल फेंक
और दिल भी टूटते हैं नहीं।

महरूम– जुदा

प्यार

303) मेरे बस में कुछ था नहीं
तुमने भी कुछ कहा नहीं
था प्यार तुमको जो मुझसे
क्यूँ तुमनें वो कहा नहीं।

अरमान

304) मर्ज़ ऐ अरमाँ के मरीज
हम तो न हुए हरगिज़ कभी
गोया ख़्वाब में मिलें उनसे
कि अरमाँ जां बनके निकले।

मिसाल

305) कुछ ना किया जिंदगी तमाम
ऐब भी कुछ कर ना सके
मुद्दतों बाद फ़ना भी हुऐ
मिसाल जमाने को दे गये।

बदनाम

306) आया शबाब हुस्न भी खूब
तय वक्त वो उम्र तक
सब इश्क कर गये बख़ूब
मैं बदनाम हो गया।

नाकाम

307) मैं नाकाम हुआ था जब
कामयाब तुम ही हुए थे
कोई बताएं जमाने को जरा
मुझे बेज़ा[1] मशहूर न करें।

बेज़ा– अनुचित

फ़िज़ा

308) गुज़र गया सब हसीन था
रह गयी अब असलियत
फ़िज़ा हसीन रुकती नहीं
क्यूँ इंसा ये समझता नहीं।

तन्हाई

309) तन्हाई भी है फ़ितरत से
कुछ खा जाने वाली जिगर
तन्हा रही जिंदगी तमाम
मैं रहा अपने साथ मगर।

तलब

310) ना कुछ है तो है मयकदा
वो दौर फ़िज़ा नहीं चाहिए
सुकून ऐ जाम की है तलब
तेरा रहमों-करम नहीं चाहिए।

बर्बाद

311) दिले बर्बाद, वक्त गुज़रा
अब ऐसा तो बर्बाद नहीं क्या समझूं
तुम्हें समझाऊँ ये तुम्हारे लायक नहीं।

हुस्न

312) मेरी जां देख मुझको करीब
न घबराई न शरमाई
था ताक़ते हुस्न का कमाल
हया गूरूर बन गई।

मेहरबां

313) इश्क आफत है हुआ करें
जिंदगी भी आफत हुआ करें
वो रश्क़ रुस्वा जमाने की
तू मुझपर मेहरबां हुआ करें।

गजल

314) फलां से सुनी मेरी दास्तां
गजल भी सुनी फलां से
मैं कहाँ निकल गया हूँ
मुझे कुछ अपना सा न लगे।

आगाज़

315) बस ख्याल तेरा मेरे ज़हन में
पता नहीं क्या बात है
हर रोज कुछ ऐसा लगे
है आगाज़ कोई क्या बात है।

आशिकी

316) मुझे भी क्या आदत है
देने की नसीहतें आशिकी
देखता हूँ पीछे जरा
दिखती है मजरूह[1] आशिकी।

गर्दिश

317) वो दौर मेरी मजबूरी का
बना ही दिया आशिक मुझे
शिक़वा न हुआ तुझे जरा
थे गर्दिशे अय्याम[2] अहम मुझे।

मजरूह- जख्मी
अय्याम- दौर

तक़ल्लुफ

318) महफिल में बुलाकर मुझे

तक़ल्लुफात नज़रअंदाज किया

उठने को मैं उठ जाता

दिल ने ऐसा करने न दिया।

मयकशी

319) यूँ ही बैठे थे हम वहाँ

शायद मयकशी थी वज़ह

मुझे तो पीनी न थी

मना करने की थी न वज़ह।

मोहब्बत

320) बड़ी मुशक्क़त बड़ी मोहब्बत

भूल जानें को बाक़ी है

अपनों में मेरे एक रोज

वफ़ात भी आनी बाक़ी है।

मयकशी

321) वो मैक़शी वो एक शौक
फिर ऐसी तो कोई शय नहीं
है जिंदगी भी अजीब यूँ
लगता है कि है या है नहीं।

इश्क

322) कुछ ऐसे खिलाड़ी न थे
उम्रे तमाम इश्क भी किया
दिल्लगी में दिल भी लगा
अब ऐसा लगे कुछ न किया

महबूब

323) पहुँचा दिया तकदीर ने
उस मुकाम पर खुदबखुद
महबूब तो मिला हंसीन
वहाँ हमजुबान न कोई।

शायरी

324) समझें हैं वो पूँछे हैं

शायरी है वो अशआर[1] क्या

चंद खतूत[2] कागज़ पर

तमहीद[3] ऐ पैग़ाम रखे हैं।

बेगाना

325) सुनता था उनके जलवे का

न इलाके में कोई जवाब

मैं भी गया कूंचे में यूँ

बनकर बेगाना कोई जनाब।

अशआर– कई शेर

खतूत– लकीर

तमहीद– भूमिका

रक़ीब

326) घिर गया हूँ हालातों से
राह भी नज़र आती नहीं
वक्त ठहर गया है कुछ
रक़ीब भी नजर आता नहीं।

हंसीन

327) वो हंसीन है तो क्या
कोई खुदा तो नहीं
न चाहे उनको हम जरा
कोई सितम से कम नहीं।

फलसफा

328) ये जिन्दगी की राहें
बता देती हैं फलसफा[1] सफ़र
बहुत से मुसाफ़िर यहाँ
बेमतलब काफिला ऐ सफ़र।

रवायत

329) वो रिवाज़ रवायत भी गजब
तारीफ तर बतर खूब हो
जिन्दगी रुत्बा हो बाअदब
फिर कज़ा[2] मशहूर क्यों न हों।

फलसफा– दर्शनशास्त्र
कज़ा– मौत

ख़ता

330) इतनी हंसी ख़ता हुई
मैं करने वाला था नहीं
तुम ही अंदर झांको जरा
गुनहगार हो वहीं कहीं।

फ़साना

331) ऐब मेरे याकि शौक
करते करते तजुर्बा हुआ
मेरे लिए तो कुछ न था
फ़साना जमाने का हुआ।

सन्नाटा

332) सुना था बड़ा शहर है
शोर शराबा भी है वहां
कैसा ये सन्नाटा हुआ
दिखता नहीं कोई यहाँ।

बात

333) बात बड़ी माकूल है कुछ
मगर कहने में न आये
हाले दिल तुम्हारा भी ये
तो कुछ समझने में आए।

फ़िजा

334) लिखे खत पढ़े जो तुमनें
फिर लिखने को भी कहा
महसूस हुई मुझे इश्के फ़िजा
न जाने तुमनें क्या कहा।

जमाना

335) घड़ी बांधने का जमाना न रहा
वक्त है साथ और वक्त न रहा
इश्क नहीं हमसफर साथ है
हर वक्त इश्क का जमाना न रहा।

उम्मीद

336) उन्हें गली को छोड़े हुए
अब तो मुद्दत भी हो गई
न जाने क्या उम्मीद है
कि मैं रहगुजर हूँ वहीं से।

ज़हर

337) शरबतें फिरदौस[1] या ज़हर दोजख[2]
है जिंदगी जो मयस्सर अब
मेरी फितरत में रोना नहीं
सच है इससे ऊब गये अब।

फिरदौस- स्वर्ग
दोजख- नर्क

दर्द

338) मुझे पता ही नहीं लगता
मेरे दर्दे दिल का सबब
आते हैं ग़ैर मेरे पास
मर्ज़ ऐ दवा लेने के सबब।

जफ़ा

339) शौक ऐ तकदीर कुछ गवारा नहीं
ना है इल्म उन हंसरतो का
वो वफ़ा उन वफ़ादारों की
मेरा दौर जफ़ा का चल रहा।

मज़ार

340) हंसते हंसाते मैंने भी
ठहाकों में जिन्दगी गुज़ार दी
गुज़र रही है अब मगर
बैठ कर अंजाने मज़ार पर।

मुश्किल

341) मुश्किलातों से मेरे दोस्त
क्यूँ बचते बचाते हैं
मुझे तो मुश्किल से ही
मेरी जां मिली है।

सिला

342) तुझे भी गिरने न दिया
हर कदम पे संभाला मैंने
बस है अफसोस यही
क्यूँ वो सिला न दिया तूने।

फ़ितरत

343) मैं तुझसे गुजारिश करूँ
ऐसी मेरी फ़ितरत कहाँ
तू मेरी परवाह करे
ये तेरी जरूरत कहाँ।

खुदा–परस्त

344) खुदा–परस्त वो क़ौम परस्त
मोहब्बत है क्या जाने न जरा
मयकदा भी एक इबादतखाना
जमाना क्या है जाने न जरा।

बहार

345) फिज़ा की बहार में
अब वो खुशबू न रही
उनका भी नाम लिया
मोहल्ले में हरकत न हुई।

जलवा

346) तेरे जलवे ही काफी हैं
सुकून ऐ दीवानों को
मुद्दत से रवायत है
इश्क सबसे नहीं होता।

दग़ा

347) लुटकर जो सूकून पाया
वो रहजन[1] को न मिल सका
तुझ जैसों से दग़ा मिलना
हर किसी को न मिल सका।

आवारा

348) सब ठीक है जो तुम कहो
जमाना तुमसे जो ठहरा वहीं
मैं आवारा हूँ आशिक नहीं
बज़्में दीवाने मेरे रक़ीब नहीं।

रहजन– लुटेरा रास्ते का

याद

349) आँसू भी बहे मगर
कुछ जी न भरा
तेरी यादों के सहारे
क्यों सुकूं न मिला।

मशहूर

350) उनसे आशना[1] न थे
फिर भी गुनहगार हो गए
कैसा मुकद्दर है ये
कि हम मशहूर हो गए।

आशना– परिचय

आशिकी

351) ये बातें आशिकी की
खत्म होती ही नहीं
खुदा का शुकर है
सुनने वाला भी नहीं।

महफ़िल

352) मुझे पता था हरबार की तरह
तेरा महफ़िल में न आना
तू तो मुनासिब थी वहाँ
बस नासमझी था मेरा वहाँ जाना।

इश्क

353) टूटे हुए दिल और इंसा
आखिर फ़ना हो जाते हैं
जिनकी तकदीर में इश्क नहीं
शख़्स वो ही यहाँ रह जाते हैं।

कयामत

354) लगे नज़र मुझे तुम्हारी

ऐसी किस्मत भी कहाँ

कयामत यूँही आ जाए

ये मयस्सर भी कहाँ।

उम्र

355) कुछ तो नया होगा ही

इस बार इस साल में

या फिर घटेगा एक और साल

हर बार की तरह मेरी उम्र में।

दर्द

356) दिल तो मायूस था मगर

उनसे गुफ्तगु में हंसता रहा

अजीब सा दर्द भी था

फिर भी मैं बात करता रहा।

तहजीब

357) उनकी हंसी अदा को
मैं समझा था देर बाद
तक़ल्लुफे तहजीब ने
किया वक्त सब बरबाद।

दुनिया

358) ये उमड़ता बाज़ार
कसरतें इंसानों की आपस में
कितना दुखी है इंसा
इस तरक्की परस्त दुनिया में।

निगाह

359) शराब भी क्या पी मैंने
गिर गया निगाहों में
ये भी क्या अंदाज़ था
संवर गया निगाहों में।

वक्त

360) सब जानते हैं खूब गया

वक्त लौटता नहीं

कैसे बताऊँ मैं यारों

मुझसे वो छूटता नहीं।

बदनाम

361) मुझे भी यारों ने बोहत

नज़र अंदाज़ कर दिया

न जाने कैसे जमाने में

मैं कुछ बदनाम हो गया।

तलबगार

362) बड़े मजबूर थे उस दिन

कि शौक ऐ ज़ाहिर किया

उन्हें मतलब भी न था

फिर भी तलबगार हो गये।

बेकरार

363) बड़ा बेकरार था मैं
कि जरा आँख लग गई
वरना गुफ्तगु भी होती
निगाहों ही निगाहों में।

अज़ीयत

364) बड़ी अज़ीयत[1] है जिंदगी
जो जीना ही पड़े तो
कितने खुशकिस्मत हैं वो
जो जिंदा नहीं हैं।

अज़ीयत– यातना

हशर

365) हशर[1] के दिन भी
कोई फैसला न होगा
इस जमीं की सियासत
का है कब्जा वहाँ भी।

कयामत

366) मुझे तो जाना था
सो मर ही गया
सुना था जिंदगी में
वो कयामत न आई।

हशर– कयामत

मोहब्बत

367) कोई मुशक्कत[1] भी न की
कि तुमसे आँखे चार हो गई
दिल में ख्याल भी न था
कि हमको मोहब्बत हो गई।

चाहत

368) कैसे वक्त गुज़ार दिया
उम्रे तमाम जिंदगी भर
उनसे न की आशिकी
मगर चाहत रही जिंदगी भर।

मुशक्कत– प्रयास

सियासत

369) बज़ाहिर थी तेरी मोहब्बत
मैं दिल ही लगा बैठा
कितना नादां था मैं अंजान
मोहब्बत की सियासत से।

दास्ताँ

370) आशिकी भी इंसा की
इंसा से खुद ब खुद
जैसी भी है ये दास्ताँ
फजीहत[1] है खुद ब खुद।

फजीहत– झमेला

इश्क़

371) मैं भी इश्क़ कर बैठा

इत्तेफ़ाकन तुम्हारे साथ

खुदा का शुक्र है

उजागर न हुई ये बात।

ख़लवत

372) ख़लवत ऐ सहरा में

अपना ही मुकाम है

तेरी बज़्में ऐ नाज़ में

क्यों ढूंढ रहा हूँ मैं।

फलसफा

373) मुझको तो तेरे दर्दे इश्क़

ने बदल कर ही रख दिया

लगता नहीं कोई फलसफा

जिंदगी के साथ है।

फलसफा

374) क्या करूँ शिकवा जमाने से
मुझे मिटा कर रख दिया
हर्फ़े फलसफा लिखे थे कभी
बंद किताब में रख दिये।

मायूस

375) वो क़रीब हैं मेरे इतने
दिल भी मायूस है उतना
शायद कह भी दूं उनसे
मैं आज खुद में नहीं उतना।

उल्फ़त

376) न मज़ा ऐ इश्क मिलता
न छेड़ते तराना वो उल्फ़त
न आता इश्क भी करना
जो वो मेरा साथ न देते।

दौर

377) ये दौर मस्ती का नहीं
दौर जुस्तजू मंजिल भी नहीं
गुजर गई सदियाँ यूँही
कोई कुछ करता भी नहीं।

सफ़र

378) बड़ी जरूरत थी मुझे
तुमसा कोई शरीके-सफ़र
न पूछिये किस्मत मेरी
वहदत[1] में गुज़रे है सफ़र।

वहदत- अकेलापन

हर्फ़

379) मिट गये वो सब हर्फ़
जो लिखें थे मैंने कभी
अब फिर लिखूँ तेरे लिए
ऐसा भी होता है कहीं।

ग़मसार

380) जरुरी नहीं ग़मसार[1] हो
बेक़रारी में उनके
हंस भी लेते हैं कभी
फिज़ा में हम बहार के।

ग़मसार– गमों में डूबा

सफर

381) मयकदे सब बंद हैं आज

वो बंदानवाज़ गुज़रा था आज

तलब कल थी वो अब भी है आज

सफर रात तक करना है आज।

तारीफ़

382) मैं भी क्या कहूँ अब

तेरी नज़्मे तारीफ़ अलफाज़

सच तो ये है कि

मेरी समझ में नहीं आता।

सूकून

383) वक्त मरने का ही था

और मैं फ़ना हो ही गया

दर्द उनके दिल में हुआ

ये सूकून मैं ले ही गया।

उल्फ़त

384) ऐ मेरे दिल न उछल
इस पैग़ाम ऐ उल्फ़त पे
है तेरी ये शुरूआत
वो तजुर्बेकार हैं उल्फ़त पे।

जिंदगी

385) जीने को मैं जीता हूँ
मर भी जाऊँगा एक दिन
ऐ जिंदगी तू ही मुझे
रुख़सत करेगी एक दिन।

असीर

386) तेरा ख्याल कुछ यादों का असीर
इश्क नहीं आशिक भी नहीं
क्यूँ फंसा हूँ रिफाकते बेरूझान में
शायद तू भी मुझसे जुदा नहीं।

हकीकत

387) हम कहते हैं खुद से
क्या कुछ नहीं किया हमने
फिर समझते हैं हकीकत
कि कुछ नहीं किया हमने।

आदत

388) उनकी भी है आदत अजीब
बस हंसते हैं जगह जगह
ये वज़ह थी वाज़िब जरा
थे नहीं वो मय्यत की जगह।

माहौल

389) माहौल था ही कुछ ऐसा
कोई मुस्कुराने वाला नहीं
उठना ही पड़ा मुझको
मेरी हंसी रुकती थी नहीं।

हकीकत

390) तुझ सी हंसी ख़्वाब हो एक
कौन जाने तू हकीकत है एक
जिंदगी बस ये चलती रहे
रुक भीजाए तो कयामत है एक।

शराब

391) बेकार ही छूटी शराब
सब सोहबत भी छूट गयी
अब न वो गुफ्तगु रही
फसाद ऐ जिरह भी न रही।

सफर

392) ना वक्त दास्ताँ सुनाने का
ना जरूरत हालात बताने की
समझ सफर की फितरत को
सहरा में कारवां रुकता नहीं।

आशिकी

393) बड़ी ला इलाज बीमारी है

ये आशिकी भी मेरे जनाब

मैं तो कहूँ न की है मैंने

कि जमाना है मानता नहीं।

जहालत

394) जहालत भी थी लाजिम

जब आशिक ही बन गये

पाया तो तुझे न हरगिज़

मजमून ऐ जुस्तजू समझ गये।

तन्हाई

395) तन्हा सी तन्हाई जालिम

वक्त भी बस गुज़रे ही न

आना न था हरगिज़ उन्हें

इन्तज़ार उनका ही किया।

रक़ीबो

396) यारों में रहा जिंदगी भर
मयस्सर न यारी हुई
हूँ रक़ीबो की जमात में
बहुत खूब निभ रही।

गुफ्तगू

397) गुफ्तगू तेरे साथ मेरी
खत्म न हो ये दिल कहे
किसे कहूँ मैं क्यूँ मगर
तुझे बात करनी आती नहीं।

ग़म

398) यार भी इतने मेरे
ग़म भी कुछ कम नहीं
हैं असली वो मगर
ग़मों का कहना ही क्या।

तमन्ना

399) हो जाऊँ फ़ना मैं यूँ
इसकी तमन्ना ही न रख
बहुत सी मेरी हसरतें
मर जाऊँगा मैं खुद ब खुद।

फैसला

400) लड़ता रहा जमाने से
लड़ाई खुद से चल रही
फैसला अब तक न हुआ
उम्र साथ है नहीं।

गुनाह

401) किया था कुछ गुनाह जरूर

मिली भी सज़ा मुस्तकिल[1]

कुछ ज्यादा तो तुझे मिली

नजरअंदाज किया जमाने ने।

अंदाज़

402) लाजवाब सी हो जाती है

तेरी हंसीन खामोश वो बात क्यों

सीखा है ये अंदाज़

गुफ्तगु ऐ क़ातिलाना जानम।

मुस्तकिल– वाजिब

अलफाज़

403) हम कहने को तो कह दें
कि हम क्या से क्या हैं
बस सामने तुम आ जाती
सब अलफाज़[1] बिखर जाते।

हुस्न

404) दुनिया है हंसीन कि नहीं
वो सिर्फ अपनी ही ख़ातिर
हम तो हैं नुमाइन्दा ए हुस्न
बस अपनी ही ख़ातिर।

अलफाज़– शब्द अनेक

ख़लिश

405) जब दिलही ठिकाने लग गया
न सताए मुझे ख़लिशे याद
अब ज़हमतें मेरी जिंदगी
मैं तन्हा रहीस हूँ तस्लीम[1]।

गफलत

406) मैं कुछ कह न सका
दिलें हालात बयां करके
वो कुछ न समझें गोया
गफलत में इश्क कर बैठे।

तस्लीम– स्वीकार

फांसले

407) इब्तेदा फांसलें कहीं दूर है
कि कशमकश जानें न कुछ
जब दौर करीबी सर चढ़ा
अब फांसलें भी करीब हैं।

जख़्म

408) नादानी ही थी वो वज़ह
जख़्म खाने की जमाने से
क्या खबर है तुम्हे ये या
आदत अब भी मुस्कुराने की।

फितरत

409) चेहरों को पढ़ने से कुछ
है हुकूमत मेरी बस जुदा
दिल भी क्यों है बेखबर
अपनी फितरत से यूँ जरा।

नखरा

410) नखरा और निखार है बहुत आस पास

नूर है तो गरूर है गलत नहीं

कुछ खास हंसरतें मोहब्बत की हो

महबूब जरा पास नादानीया कर

बेफिक्र जिगर है पास पास।

रिश्ता

411) रिश्ता नादानी और इश्क का

बरसों से बहुत खूब उसूल ओ कायदे बेमानी है

हों वो नादान हंसीन महबूब।

शातिर

412) जब दिल है नादान

तो शातिर तो मैं नहीं

तू नादान है बेहिसाब

शातिर भी हो बखूब।

हमसफर

413) गुज़रा है वक्त मुश्किल से

खैर गुज़रा तो सही

अब तू है हमसफर मेरी

न गुजरे वक्त तो न सही।

बात

414) सूकून से बैठो तो जरा

हम कुछ गुज़री बात करेंगे

मोहब्बतें प्यार की न सही

हाँ कुछ और बात करेंगे।

गुस्ताखी

415) अंगड़ाई में खुल गई थी तू

तन्हाई में बेफिकर थी तू

देखने से रुक सका न मैं

गुस्ताख मैं और सबब थी तू।

रवायत

416) इतना आसां नहीं कुर्बान होना
पर आसां है कुर्बान कर देना
बात मौके और रवायत की
क्या जरूरत है कुछ बदलने की।

नाचीज

417) हंसती है देखकर वो
मुझको कुछ बड़ी हस्तियां
रखने को उनकी शान
मैं नाचीज बन गया।

नींद

418) दिन तन्हा वक्त है ठहरा

रात भी आएगी खाने मुझे

नींद बैचेन न आये जरा

दौर ग़मे अय्याम[1] चल रहा।

कशिश

419) मैं खुद ही खुद से दूर हूँ

तुझे क्या कशिश मेरे पास है

मेरी जां मुझे ये क्या खबर

मेरी नफ़स नस तेरे पास है।

अय्याम- क

ग़ैर

420) अपने भी तलाशे नहीं जाते
चले जाते हैं फिर आ जाते
रह जाते फिर हम ही तन्हा
जो ग़ैर हमसे मिलने न आते।

मयनोशी

421) महफ़िल भी थी खामोश खूब
गुफ्तगु ऐ अंदाज़ थे रुके हुए
कुछ सुख़नवर[1] थे बस बेसब्र
आगाज़े मयनोशी[2] इंतज़ार में।

सुख़नवर– शायर, साहित्यकार
मयनोशी– शराब पीना

आशिक

422) आशिक भी इश्क न करे, तो कोई दूसरा क्या करें।
होता है जब ये हाल, तो माशुका भी क्या करें।
मयकदा खुला है खाली, है तलब कहीं कुछ दूर।
जब जाम नहीं है पीना, तो साक़ी भी क्या करें।
आलम शबाब बीमार, तो फिर शराब भी क्या करें।
तेरी हसरत भी बुझी है, तो मेरी हसरत भी क्या करें।
ना छेड़ फिर वो तराना, मेरी जिंदगी नहीं है मुझसे।
तेरी आदत भी फिर वही, मेरी आदत भी क्या करें।
हैरत नहीं तेरी अदा पर, हंसी हो कुछ इस कदर।
बज़्म में जगह नहीं है, ये बेगाना भी क्या करें।
आदत में तो न था, हरगिज ही खफा होना।
तू बेरंग इश्क दिखाऐ, ये बेकार फिर क्या करे।
मरना तो नहीं कुछ मर्जी, जीने में क्या बुरा है।
फिर भी तेरी ये मंशा, तो जीकर भी क्या करें।

जुस्तजू

423) नज़रें मिली और ना हटी

रुक गये चलते हुए कदम

दिल भी धड़के साथ साथ

और जुस्तजू आगे शुरू हुई।

जिंदगी

424) जिंदगी यूँ समझो खत्म हुई

सफ़र भी बस पूरा हुआ

ग़ौर अब मैं क्या करूँ

क्या बचा क्या पूरा हुआ।

गुफ्तगु

425) तुझसे गुफ्तगु ऐ यारी रोज़

मैं भी मुद्दों पर अड़ा रहा

वक्त भी गुज़रा खूब रोज़

बस असल मुद्दा हटा रहा।

पेशमां

426) न जाने क्यूँ पेशमां[1] है दिल
क्यूँ दाखिल हुआ मुशक्कतगाह[2] में
हूँ दौर और महफ़िल से परेशान
मोहब्बत भी आफत लगे जीने में।

यार

427) दिखाई पड़ता है कोई शख़्स, जब यार सा कहीं।
नजर आते हैं सब जख़्म, अपने जिस्म पर कहीं कहीं।
मैं जब सोचता हूँ मोहब्बत, की थी मैंने यहीं कहीं।
ढूंढता रह जाता हूँ मैं, उस जगह को कहीं कहीं।

पेशमां– शर्मिन्दा
मुशक्कतगाह– प्रयास करने वालो की भीड़

वो रहते हैं मेरे दिल में, उन्हें मैं ढूंढता हूँ हर कहीं।

मिलते नहीं,हैं बहुत दूर,मैं मिलने जाता हूँ कहीं कहीं।

वो फिर भी मिलते हैं हर रोज, मैं भटकता हूँ कहीं कहीं।

दिखाई पड़ता है कोई शख़्स, जब यार सा कहीं।

अदा

428) सुनते सुनते उनका ये कहना

मुझे कुछ कहना नहीं आता

हैरां हूँ उनकी ये अदा

कहीं और उनसे सुना नहीं जाता।

आराम

429) मेरी जिंदगी और समां आसां

बनते गए रास्तों के मुकाम

वक्त से मौत और चैन की नींद

मयस्सर नहीं सबको ये आराम।

मुसाफ़िर

430) वो रास्ते चलते आशिकी के
मजनूँ ही जाने हर मुसाफ़िर
चलते चलते तो गिरें हैं
गिरते गिरते भी चले हैं।

शिकवा

431) मेरी झिझक याकि ज़िद
क्यूँ इज़हारे इश्क न कर सकी
तू न थी हालाते गाफ़िल[1]
फिर क्यूँ शिकवा न कर सकी।

गाफ़िल- मूर्ख

अदा

432) तेरी अदा है कि हर कोई
देख कर यूँ ही मर जाएगा
गुज़रों ना जनाजे की तरफ
देखकर मुर्दा भी जी जाएगा।

दरवेश

433) दुआएं ही लेनी है तो
कुछ जाम पिला पहले
ये दरवेश[1] वो शख़्स है
बंद मयकदा मिला जिसे पहले।

दरवेश– फकीर

मकसद

434) मयकदे में हूँ और मकसद से
साकिया है कि मतलब नहीं
बस पिलाने का शहूर है खूब
मुझे सूरूर है मकसद नहीं।

बात

435) जिगर मेरा भी दर्दे आशियाना
छोड़ो इस तरह की बातें
तुम्हारा दिल है क्यों परेशान
करो कुछ इस तरह की बातें।

इश्क

436) कर आगाज़े इश्क हस्ती से
चाहे सिला ही न मिले
बस शोर मचे बस्ती में
चाहे रुत्बा ऐ शख़्सियत न मिले।

दास्ताँ

437) इश्क करो मोहब्बत भी खूब

न कुरेदों फ़ितरते जिगर मेरा

बड़ी बेसाहिल[1] है दास्ताँ मेरी

ये तंग कूंचा न रास्ता तेरा।

आशिक

438) तेरी बज़्म और तेरे अंदाज़

तबाह तमाम आशिक हों रोज़

मुझसे मेरी क्या बात करें

मैं आशिक हूँ वहदते दुनिया कोई।

बेसाहिल- बिना किनारे का

खुरक

439) ना दी पीने की सलाह
ना थी खुद पीने की खुरक
अब हर्ज पीने में ही क्या
है जिद जब बरबाद होने की।

हकीकत

440) क्या करूँ मैं तारीफ तेरी
अदा तेरी ख्याल और अंदाज़
तू कुछ मेहरबां मुझ पर
मैं हकीकत कैसे बयां करूँ।

आशिकी

441) जिंदगी मुअय्यन[1] है गुज़र
मौत भी वक्ते वो दिन
दरसफर मजनूँ है मस्त
सहरा में आशिकी हर दिन।

इंसा

442) इंसा ही क्यूँ परेशान है
मुअय्यन है वक्ते ग़म खुशा
जमाने के हर सूकून हैं
पर मन है कि मानता नहीं।

मुअय्यन– तय होना

शिकवा

443) हम भी पीते थे शराब
उनकी नजरों से कभी-कभी
वो दौर भी क्या खूब था
उनकों शिकवा न था कभी।

मुकाम

444) मर भी जाये तो क्या
पहुँचेंगे नहीं तय मुकाम पर
ये जिन्दगी भी है अजीब
कि कहीं जाया नहीं जाता।

हुस्न

445) दश्त[1] सहरा[2] और समंदर

तेरे हुस्न में मुश्ते ख़ाक[3] हैं

इल्म तुझे ये हो न हो

मुझे लगे तू शातिर सय्याद[4] है।

नजर

446) बज़्म में जमात आशिकों

की तू अभी मशगूल है कहीं

बस नजर मिली एक बार

तेरी जिंदगी ठहर गयी वहीं।

दश्त- जंगल

सहरा- रेगिस्तान

ख़ाक- धूल मिट्टी

सय्याद- शिकारी

यार

447) रह रहा हूँ आज मैं

जिनके रहमों-करम पर यार

वो भी कभी मशहूर थे

हमारी आशिकी से यार।

सिलसिला

448) तुम्हीं क्या बस मैं ही अपनी

तबाही का हूँ बेशक सबब

जो कुछ रह गया बाकी

तुझसे इश्क का सिलसिला।

खास

449) क्यों हररोज कुछ न कुछ

खास रोज होता है

जबकि दिन उजला रात अंधेरी

और कुछ खास नहीं होता है।

जिंदगी

450) मरना भी है जिंदगी में जरूरी
ग़ोया जिंदगी जिंदा हो कि न हो
बेशक जिंदगी में कुछ न हो
पर मौत बेमौत भी मुक़म्मिल है।

ख़्वार

451) है काफ़िर भी तसव्वुफ ऐ तहजीब
वो बेताबीर[1] जो हराम माने
यूँ ही मानता मैं जमाने की तरह
जो बादख़्वार[2] न होता।

बेताबीर– सूफीनामा
बादख़्वार– शराब

मुश्किलात

452) मुश्किलाते जिंदगी की ना आसां
जो आसां वो दिलचस्प नहीं
मैं तो चला था मुश्किलातों की तरफ
तूने ही जिंदगी आसां कर दी।

निग़ारेजां

453) हम इश्क तो कर लें
जानेजां जमालियते[1] खज़ाने से
चाहे ख्याल भी न करे
निग़ारेजां[2] जरा भी हमारे से।

जमालियते- खूबसूरती
निग़ारेजां- खूबसूरत महिला

इंसानियत

454) मैं मशहूर हूँ जरा भी नहीं
कुछ कुछ बदनाम सा मगर
फ़ितरत में कोई सियासत नहीं
है इंसा सी इंसानियत मगर।

खस्तगी

455) खस्तगी मुझ बेकार की
क्या कुछ गुल खिलाएगी
मैं मुसाफ़िर हूँ दरसफर
किस्मत मुझे क्या राह दिखाएगी।

मुलाकात

456) जहमत वफ़ा और जफ़ा की
वो तब जब इश्क न मयस्सर
बदनामी तेरे रब्ते इश्क की
वो तब जब मुलाकात न मयस्सर।

दुनिया

457) नज़र में ये दुनिया

है दुनियादारों की दुनिया

है देखने का अंदाज़

मट्टी में मिलती रही ये दुनिया।

शिकवा

458) चाहत थी कि मर जाऊँ

वो शरीर मौत थी बेवफ़ा

शिकवा करूं कहाँ जाऊँ

अब जीस्त मुझपर है फिदा।

तबियत

459) इश्क से तबियत कुछ सुधर गई

फिर लगा नहीं बिगड़ गई

था खुमार अर्से से जवानी का

पता लगा उम्रे इश्क निकल गई।

ईद

460) आज ईद अपनी मिठास से

गले मिल रही है शहर शहर

न कोई शख्स महरूम रहे

दिन रात चले यूँ जश्न शहर।

मोहब्बत

461) मेरी जुस्तजू में क्या ऐब था

थी न कोई खस्ता हालत मेरी

तेरे नसीब में मयस्सर न था

वो ऐश दिलचस्प मोहब्बत मेरी।

हमसफर

462) मुद्दत हुई तेरी यारी को

तेरे मेहमां न बन सके

तू मेरी दिलकशी की कायल

क्यों तेरे हमसफर न बन सके।

हकीकत

463) क्या पूछते हो फितरते वक्त
हकीकत वक्त की कुछ नहीं
है वो शय बस मयकदे में
जिंदगी में बाकी कुछ नहीं।

आदत

464) वक्त नहीं पर आदत मेरी
तेरी अंजुमन[1] में आने की
हैं रास्ते वो ठिकाने और
मन करता नहीं वहाँ जाने को।

अंजुमन- क

बदनाम

465) तुम शबाबे आलम कयामत
हम हुस्ने चराग़ भी खूब
बदनाम हुए हम तुझसे
तरसे मोहब्बत को तेरी खूब।

फ़साना

466) ना पूछो ग़मे दिल से
क्या दर्द का फ़साना है
उजड़ा हूँ कि न उजड़ा
हर गैर भी जाने है।

मकसद

467) हैरत में हूँ मैं खुद पर
क्यों जी रहा हूँ मैं
मकसद मेरा न मंजिल
और साँस ले रहा हूँ मैं।

रवायत

468) मस्ते फ़तह पस्ते शिकस्त
है जमाने के ये दो अंजाम
बेताल्लुक रिआया इक्तिदार से
जमाने की रवायत है अंजान।

बखान

469) वो हुनर का जरा बखान
अपने सब हो गये परेशान
उनसे पूछा उनका ही हाल
जाने क्यों हो गये पशेमान।

वहम

470) हसरतें जिगर में जीत के
तो हम थे सुख़नवर[1] खूब
वो रुख हवा का उधर
इधर सिर्फ वहम ही खूब।

हकीकत

471) क्या पूछते हो फितरते वक्त को
हकीकत वक्त की कुछ नहीं
कर रहा हूँ मैं आरज़ू मौत की
जिंदगी में बाकी कुछ नहीं।

सुख़नवर– शायर

जिंदगी

472) क्यूँ उलझ रहा हूँ जिंदगी से
जब वक्त है फ़ना होने का
जान भी बस जाती नहीं
जहमतें है सब उलझाने को।

अंजुमन

473) तेरा हुस्न तेरे अंदाज़
सब नहीं दिल लगाने को
मैं आता हूँ अंजुमन रोज़
क्या शय है न बताने को।

फलसफा

474) इंसा की फितरत है एक फलसफा
हैवानियत है आसां समझ के लिये
न समझा वो वक्त की मोहब्बत
अब जिल्लत बची है समझ के लिये।

लमहा

475) वो लमहा वो वक्त उस रोज़
तेरा सामना कुछ यूँ हुआ
गोया मैं तैयार न था फिर भी
सब कुछ मेरा सा हुआ।

बज़्म

476) कहने को तो उस रोज़
बज़्म में इज़हार न कर सके
बस छोड़ा तेरी समझ पर
सारी रात हम सो न सके।

सूरत

477) मुझे मुझसे कुछ कहने दीजिए
गुफ्तगु न अपनी शुरू कीजिए
तुम्हारी तरह है तुम्हारी शक्ल
मुझे अपनी सूरत समझने दीजिए।

चेहरा

478) आक़िल[1] भी खूब शातिर भी खूब
मासूम चेहरा तेरा कातिलाना
है अदा का रुख मेरी तरफ
क्या वाकई है कयामत का आना।

आवारा

479) मुझे लगे मैं इंसा हूँ शायद
तुझे इंसा से मतलब नहीं
आवरगी तुझे दिलक़श लगे
रहरवाँ हूँ मैं आवारा नहीं।

आक़िल– हुनरबाज

खुदा–परस्ती

480) मयकशी भी कुछ खुदा–परस्ती
है जमाना कहे इसको हराम
नहीं जानते सूकून ऐ मय को
है परेशान कितने वो इंसान।

मुशायरे

481) सब शोर बखां और बकवास
मुशायरे महफ़िल चलते रहें
मुखौटे मशहूर नक्कादों[1] के
अर्जे हुनर[2] मसलते रहे।

नक्कादों– आलोचक
हुनर– गुणवान

आदत

482) मयकशी वो खुदापरस्ती का फर्क
हूजूम ऐ शख़्स में न कोई कम
इबादत और आदत भी खूब
वो दिखावा है जहाँ है कहीं कम।

मशगूल

483) है इश्क मय से याकि माशूक
मयकदा मशगूल हर शख्स से
भरे प्याले और फिर खाली
साकिया ही समझे हर शख्स से।

हसरत

484) नामों निशां भी मिट गया
और हम भी मिट गये
हसरतें मिटी ना मिटेगी
यूँ कि इश्क तुमसे जो किया।

गुफ्तगु

485) वफ़ा न सही बेवफ़ा ही सही
गुफ्तगु ऐ आलम शुरू तो करें
इश्क उल्फत मोहब्बत नहीं
खुदी को खुद से जुदा तो करें।

सिलसिला

486) वो ग़र्द वो धूल उड़ती रही
काफिले और कारवाँ गुजरते रहे
सिलसिला सफर अभी थमा नहीं
कोई नहीं सवाल सब कहाँ गये।

उल्फत

487) वो आएँगे मेरे कुछ करीब
इश्क नहीं वज़ह वो अदा
शरीर हैं मुझे शिकवा नहीं
अब इशारते उल्फत है अदा।

रास्ता

488) क्या कहूँ मैं ग़ैर ऐ वक्त से

मुझसे दूर मेरे साथ न चले

खुदा परस्ती भी रास्ता है

रास्ता मेरा मेरे साथ न चले।

फलसफा

489) अब जिंदगी है यही

तो बरबादी है मंजिलें मकसूद

समझूं मैं ये फलसफा खूब

पर तेरी मोहब्बत से मजबूर।

बात

490) वो हर गलत बात मुझे

गलत बात न लगे है

और मुझे ही सही बात

क्यों गलत बात लगें है।

हालत

491) कह भी दूं और चुप भी रहूँ
न कोई हालत समझने वाला
होंगे कभी वो दिले गमसार
हूंगा मैं तब समझाने वाला।

शायरी

492) शायरी है असल मजमून बगैर
इश्क मंजिल मय और दिल्लगी
फिर जिंदगी में सब बेकसी
हुऐ अंदाज लफ्जे ख्याल शादाबी।

वक्त

493) घड़ी बांधने का जमाना न रहा
वक्त है साथ और वक्त न रहा
इश्क नहीं हमसफर साथ है
हर वक्त इश्क का जमाना न रहा।

औकात

494) वक्ते रुख़ आसां हंसी है
मैं भी कुछ नशे में रहने वाला
तल्ख़[1] कितनी है मेरी औकात
हर शख़्स नहीं ये समझने वाला।

कूंचा

495) हूँ ग़मजदा याकि खुशगवार
रस्ते में है मयकदा बार बार
चलते कदम क्यों न रूके
वो उनका कूंचा है गली के पार।

तल्ख़- कडवाहट

मस्ती

496) मस्ती मुझे माशूक की
इस कदर थी चढ़ी जरा
रस्ते में रुकी वो मेरे लिए
और मैं आगे निकल गया।

हार

497) तेरी हार भी है जालिम
फिर भी चलना है हारने को
क्यों तू डरे इस हार से
रकीब तेरे हैं बस हारने को।

तहजीब

498) जमाने की तहजीब है खूब
है दोस्ती तो दुश्मनी भी खूब
निबाह के चले साथ साथ
वक्त पर दगा देने को खूब।

वक्त

499) वो खुश हैं यार मेरे
ग़म ऐ चोट मेरे दिल पे
जिगर कुछ सख्त है मेरा
वक्त यूँ ही गुजर जाएगा।

आवारा

500) बेकार हूँ आवारा भी बहुत
बेवफा बेदाद नहीं मैं
फनकार हूँ आशिकी का बखूब
खिदमतगार जरा नहीं मैं।

जख्म

501) वो ले चले खातिर ऐ इलाज
जनाब ऐ हकीम के खाने
दर्दे जख्म थे उनके दिये
ये मैं तो जानूं हकीम क्या जाने।

अहसासात

502) मैं मरता हूँ कि जीता हूँ
अहसासात मगर दोनों के
इश्क में वफा थी कि ज़फा
अहसासात हैं दोनों के।

कुदरत

503) सूफी हूँ मैं बस कुदरते इश्क
है रब भी सूफी कि नहीं
ये इश्क मेरा हुस्ने कुदरत
दिया दिल मुझे क्यूँ रब को नहीं।

तहजीब

504) ना जानता था उनकों जरा
और जन्मदिन मुबारक कहा
फिर इस तरह यूँ बेमतलब
तहजीबें आज में दाखिला हुआ।

शराफत

505) वो मंजिल मिली बहुत दूर
बड़ी देर से मिली गोया
कुसूरे ऐब ने सिखाया तो
शौक ऐ शराफत ने रुलाया।

फरियाद

506) फरियादी फरियाद करता रहा
वक्त ब वक्त गुजरता रहा
जिंदगी बहुत पर थोड़ी रही
मयकदा ही रहम करता रहा।

बज़्म

507) बज़्म है आपकी तो बखूब
उनफ़रादों आशिकों से भरी
मुझ गरीब नाचीज को कोई
रकीब अपना न नजर आया।

बर्दाश्त

508) मुझे तो खेलना है बहुत बाकी
जिंदगी कम है पर खेल बाकी
गुंजाइश तेरी आफतों में कम
बर्दाश्त मेरी फितरत में है बाकी।

मर्जी

509) मेरी मर्जी कि न जाऊँ उधर
मर्जी की मेरी चलती नहीं
दिन भी निकला सहर हो गई
उनकी खिड़की खुलती नहीं।

बदतमीजी

510) यारों की बेजा हरकतों पर
मुझसे इजहारे नाराजगी हो गई
ठीक थी या ज्यादा ठीक
मुझसे ये बड़ी बदतमीजी हो गई।

मुकाम

511) बैठा हूँ उस मुकाम पे
जो मिलता नहीं आसान से
तय वक्त है जुदाई का
न समझे है इंसा आसान से।

खुदा

512) क्या खुदा परस्त मैं नहीं
हाँ शायद खुदा परस्त मैं नहीं
ये तो खुदा ही बस खुदा है
जो मुझ पर बेमयस्सर[1] नहीं।

बेमयस्सर– क

मंजिल

513) मुझे मंजिल तो मिली बखूब
बस चलते चलते तन्हा सफर
राह भी मिली हंसी हराम
कि अब मुकाम लगे बेजार।

अंदाज

514) वो दिलकशी मेरे ख्यालों की
उनके अंदाज भी दिलकश लगे
उन्हें मैं ही दिलचस्प लगूं
मुझे वो ही लाजवाब लगे।

रास्ते

515) वो भी क्या जिंदगी थी
महफिल में होते थे शरीक
उनके रास्ते अब बदल गये
मेरी जिंदगी में है क्यों शरीक।

मंजिल

516) मंजिल की थी न तलाश
और मंजिल मिल गयी मुझे
निगारे जान वो मेरी हुई
बज़्में दौर न गवारा मुझे।

बात

517) हुजूम तो नहीं बस चार
बंदे काफी हैं पहुंचाने में
बातें सारी हैं वो आवाज
बस बात एक ही काफी है।

ख्याल

518) तमाम उम्र बस निकल गई
तेरा ख्याल न गया दिल से
अच्छा हुआ तू ना मिली
ख्याल निकलजाता दिल से।

शौक

519) मैं शौक शौकीनों सा करू
मंजिलें सफर न तलाश है
बस डूबा हूँ गर्क[1] शौक में
हमसफर की न तलाश है।

तवायफ

520) है तवायफ भी क्या हंसीन
क्यों हराम है इस जमाने में
मैं बागी नहीं यूँ जमाने का
है तवायफ अहम जमाने में।

गर्क– नाश होना

कशमकश

521) मैं जाम हाथों में हू लिए
तेरा ही ख्याल क्यों आता है
है सूरूर कशमकश जहन में
ये शराब का कि तेरा है।

सफर

522) रस्ता तो फिर भी कट गया
सफर अभी कुछ बाकी है
मिलने को सब मिल गया
उनसे मिलना अभी बाकी है।

रंग

523) रंगीली संग खेली वो होरी
तो रंग ऐसा चढ़ा मुझी पर
लो फिर से आई है होरी
रंगीली फिर रंग चढ़ाये मुझी पर।

आवारा

524) मेरी मोहब्बत तेरे वजूद से

है गुनाह ये सारे शहर में

मैं आशिक हूँ मस्त आवारा

तू महजबीन है बस बेगुनाह।

इश्क

525) मैं गम से घबरा तो जाऊँ

जो तू इश्क न करे

फिर भी वहशत[1] क्यों है

कि तू इश्क मुझे ही करे।

वहशत– दहशत

शायरी

526) जब रश्के सबब है शायरी
वो इंसा नहीं कुछ हुनरबर[1]
शायरी है बहती वो दरिया
हर किसी को न डुबोये।

गुनाह

527) तैयार तो नहीं था जरा
वो सब गुनाह करने के लिए
नजरों में उनकी नजाकत
और गुनाह सब होते गए।

हुनरबर– गुणवान

बेवफा

528) वो बात बेतकल्लुफ है कुछ
और तकल्लुफात है अदा
नजरों में उनके नशा ए इश्क
जबकि बातों से जरा बेवफा।

सफर

529) क्या सफर का था समां
रस्ता भी बस चलता रहा
तलाशता रहा खुदी को
मैं खुद ही वाइज़[1] रहनुमा[2]।

वाइज़– धर्म उपदेशक
रहनुमा– रास्ता बताने वाला

दर्द

530) अहसास मेरा मुझे इश्क का
क्यों बरबादी ही न लगे
बस मीठा सा दर्द ए जिगर
और दर्द बस दर्द न लगे।

अंदाज

531) क्यों रुक गया मैं खुद ब खुद
देखकर बेजा तफरीक[1] उनकी
करनी थी कितनी वो बातें
मेरी नहीं उनके अंदाज की।

तफरीक– भेदभाव करना

बात

532) चल पड़ी मेरी वो बात

जमाने को भी रास आई

हूँ हैरत में मैं ऐ खुदा

बात मेरे अपनों को न भाई।

अदा

533) क्या शरीर अदा थी वो

नजरें तुम्हारी वो कुछ आंसू

हम तो मर मिटे ही थे

और तुम मुस्कुराने लगी

जिंदगी

534) जिंदगी थी अभी जरूरत

मर्जी थी बस फना होने में

मुझे छोड़ गए मेरे वो सब

मैं क्या छोड़ू कुछ पता नहीं।

फलसफा

535) मेरी शख़्सियत की बातें और
फलसफा तेरे शौक के लिये
फक्कड़ हूँ मैं आवारा भी
बेकसी वाहियात मुझे लिए।

जवानी

536) क्या पूछो मेरी मस्त जवानी
जो ना रही मेरी अब जरा
जब थी मेरी वो यूँ साथ
मैं बस कुछ होश में न था।

जहन

537) लिखने को तो लिख दूँ सब
कुछ समझने में न आये
बस चंद खतूत ही काफी हैं
गर जहन में घुस जाये।

जद्दोजहद

538) वो जिंदगी की जुस्तजू
जद्दोजहद सब बकवास है
हालात मेरे, मेरे साथ नहीं
और तू कहे तू साथ है।

बात

539) मैं देखू और लगातार देखू
ये कोई नई बात नहीं
तुम न देखों नजरें भी चुराओ
ये भी तो सही बात नहीं।

दास्तान

540) दास्तान मेरी मोहब्बत की
बस मोहब्बत ही न लगे
जवानी भी सारी गुजर गई
बदस्तूर मोहब्बत चल रही।

जज़्बा

541) जहन को भी ना जाने
जहनीयते जहां को ना जाने
दे रब उनकों जज़्बा वो
वो सिर्फ अपने को ही जाने।

जाम

542) वहशत कशे फितरत नहीं
फिर घबरा गया था मैं
तौबा की थी न पीने की
जाम पर जाम पी गया था मैं।

सफर

543) मौसम तो ना था मगर
कुछ वक्त भी ना था
बस दर्दे जिगर से परेशान
और मयकदा भी सफर में था।

नशा

544) वो जाम मयकदे में
तेरे हाथ से यूँ साकिया
मुझे नशा मेरे महबूब का
तेरे जाम में न नशा।

शरारत

545) जो बात न कहनी थी जरा
लब से निकल ही जाती है
शायद थी उनकी ही शरारत
हसरत वो पूरी हो जाती है।

अज़्म

546) वो शायरी है अब तो
तब सब जिंदगी गुजर गई
तेरा सुस्त सहमा सा अज़्म[1]
और मेरी जिंदगी गुजर गई।

समझ

547) वो क्यों सब समझ गये
मैं जो बस कह न सका
अब क्या समझाऊँ उनको
ये बात कुछ ठीक नहीं।

अज़्म– हौसला

वतन–परस्ती

548) जियें या मरे परवाह नहीं

ना इल्म अंजामे सबब का

बस वतन–परस्ती जूनून है

वो सियासत गार आबाद हैं।

जज़्बा

549) वो जज़्बा वतन का रखते हैं

वो मरना मिटना जाने हैं

जो ख़लिश वतन से रखते हैं

वो मरना मिटना क्या जाने।

जनाब

550) बातें बनाकर बेकार की

वो खुश कर गये जनाब

मुझे असल कुछ और लगे

शुक्रिया कैसे कहूँ जनाब।

अदा

551) तू शोख़ शरीर हर अदा से
पर्दा किये यूँ शबाब को
मुझे खामखां बेपरदा करे
तेरा एतराफ महशर मेरी।

गुफ्तगु

552) गुफ्तगु ना शुरू हुई
इजहार दिलों का हो चला
इजहार दिलों का चल रहा
बस गुफ्तगु ख़ामोश है।

हुस्न

553) दर्द भी जब आलम ऐ हुस्न
आगोश में समा जाता है
नादान दीवानों को सिर्फ
हंसीन हुस्न नजर आता है।

शौकीन

554) शौकीनों की भी क्या मिसाल
मौजूद जहां वो हाल बेहाल
सब मस्त रहे दिलचस्प समां
हालात रहे क्या खुश गवार।

हसरत

555) तकदीरें शौक जो गंवारा नहीं
न लुत्फ अंदोज[1] वो हसरतें
उन्हें इश्क है महबूब से
मेरी मोहब्बत दश्ते वीरान[2] है।

अंदोज– मजे लेने का तरीका
वीरान– सूनापन

नसीब

556) शायरी का मुझे इलम नहीं

शायर भी मैं बिलकुल नहीं

बस जख्म दर्द जिगर में हैं

है नसीब इश्क इस दर्द का।

काबिल

557) क्या मुँहफट और मशहूर

मुझ बेकार बदनाम से ज्यादा

बस जरा कुछ पीछे छूटे

वो काबिल मुझ बेकार से ज्यादा।

वजूद

558) वजूद मेरा कुछ भी नहीं
हूँ शख़्स बहुत बेशख़्सियत
जिंदगानी भी न खास है
मारूफ[1] मस्त हूँ दरसफर।

जख्मी

559) मैं दर्द थाम तो लूं
जिगर मेरा ही है जख्मी
ये दर्द मेरा ही नहीं
जिगर उनका भी है जख्मी।

मारूफ- क

मयस्सर

560) शहर में वो रौनक है

इलाका है मस्त परस्त

जश्न भी बखूब है यारो

न मयस्सर मुझे ये वक्त।

सफर

561) सफर गुजरा उस दौर से

जो अब तक फुर्सत नहीं

मंजिलें मिली तमाम मुझे

सफर ऐ सफीना[1] रुके नहीं।

सफीना– क

जशन

562) मौका था न जशन का
जो अब है बार बार
कुरबानी की अहकामात[1]
अब आवाम की दरकार।

गुमान

563) अहसासात वो दर्दे जिगर मेरे
बस दब गयें कुछ गुमान से
इजहार दिलों का हो चला
हैं रूबरू हम आगोश में।

अहकामात– क

रोग

564) मैं चल पड़ा उस जूनून में
जोशे जिगर बस वतन था
सब छूट गये जो मेरे न थे
वो रोग जिगर में उनके न था।

अदा

565) वो कसीदें[1] तेरे हुस्न के
कहूँ फलसफा तेरे नूर का
मेरी बात में तो दम है वो
तेरी अदा में हर कत्ल का।

कसीदें- तारीफ

आवारा

566) सब ठीक है जो तुम कहो
जमाना तुमसे जो ठहरा वहीं
मैं आवारा हूँ आशिक नहीं
बज़्में दीवाने मेरे रकीब नहीं।

तर्जुमां

567) रिश्ता मर्द का मोहतरमा से
क्या खूब है जरा अधूरा
तर्जुमां दास्ताँ इस बखां का
जुबानें सब किताबों में न पूरा।

बेकार

568) मुझको तो वो जाने हैं
कुछ बदनाम सा 'बेकार'
गोया उनकी पसंद है
मोहल्ला हैरान है बेकार।

इत्तेफाक

569) उनकी दीवानगी में हम
शोहरते रईस हो गए
गोया इत्तेफाक ही था
बेखुदी से जुदा हो गए।

सुकूं

570) हर शख्स को परेशान
होना है गंवारा जरा
इतना भी शहर ऐ सुकूं
दिल को चुभता है जरा।

शख्सियत

571) उन्हें ऐसी शख्सियत का
शख्स कहते हैं शहर में
देखिए इस बार अब
क्या गुल खिलाते हैं शहर में।

गिला

572) अब क्या करूँ गिला भी

कि तुम रजामंद न हुए

जिंदगी गुजर गई तमाम

ऐसी किस्मत न हुई।

शागिर्द

573) मैं आशना[1] हूँ तेरी नज़र

निगारे जान तू शहरे तमाम

कूंचे आशिक तेरे हरदम जमा

मुकद्दस[2] दीवाना मैं शागिर्द तेरा।

आशना– परिचय

मुकद्दस– भाग्यशाली

गैर

574) गैरों की खिदमतें तरफदारी
से मेरी हैं वो कुछ परेशान
मैं उनकों ये कैसे बताऊँ
वो भी कभी यूँ गैर थे।

तबाही

575) ज़हमतें इश्क क्या गले पड़ी
अच्छे खासे हम बेकार हुए
तेरा जूनून सर पे सवार है
तबाही मुझे मेरी जिंदगी लगे।

फ़ाके

576) हमारी फ़ाके मस्ती[1] भी खूब
वो मयपरस्ती थी हररोज
यार हम ना बदले हैं अब
बस वो आदतें ना रही।

जिंदगी

577) मैं तेरे इश्क में तबाह
और यूँ जिंदगी उजड़ गई
ये कैसे अफ़साने शहर में
कि तू मेरी जिंदगी बन गई।

फ़ाके–मस्ती– फक्कड़पन

तकरार

578) अभी मिलना भी ना हुआ
तकरारे मंजर हो गया
दीदार शक्लों का ना था
और बहुत दूर हो गया।

हलचल

579) उल्फत में जो डूबा दिल है
जुबां पर कुछ आता नहीं
लबों पे एक हलचल सी
अलफाज है निकलते नहीं।

इज़हार

580) है इश्क उनको जो मुझसे
तो मुअय्यन[1] है इज़हारे दिन
यार अब कैसे मैं कह दूँ
वो वक्ते दिन आता नहीं।

ख़्वाबों

581) जुस्तजू तेरी ना मुलाकात की
मोहब्बत भी शायद है नहीं
बस गुजारिश तुझसे ये मेरी
ख़्वाबों में आना ठीक नहीं।

मुअय्यन– पक्का होना, तय होना, निश्चित है

जहन

582) जहन से ना जानू जरा
रहीस कितने तालीम से वो
मुझे क्यों हांसिल है सब
खाली हाथ खड़े है वो।

निकम्मा

583) इश्क ने गालिब
निकम्मा कर दिया
वरना फना हुए और भी
सुख़नवर[1] जो मशहूर न हुए।

सुख़नवर– शायर

बेकस

584) मुहाफिज[1] है मुकर्रर मुस्तैद
इलाका भी है बस जरा गैर
मैं फकीर मारूफ[2] आकिबत[3]
बज़्में नाज मौजूद हूं बेकस।

आफत

585) दौर ऐ सागर न मेरी जिंदगी
दौर ऐ हुस्न भी चाहत नहीं
बस आफते मेरा लिबास है
वो शबाबे शराब क्यूँ पास है।

मुहाफिज– रक्षक
मारूफ– प्रसिद्ध
आकिबत– दूसरी दुनिया

अदा

586) अदाऐं हसीनों की भी क्या
है नादान बहुत बेमिसाल
जानती है वो सब कुछ
फिर पूछती हैं दिल का हाल।

बात

587) बात कहनी थी वो मुझे
तुमनें ही बात कह दी मुझे
वो बात अब क्या कहूं
मुझे बात तेरी वो बात लगें।

झोंका

588) झोंका हवा का ले चला
मेरे नगमों के उन पन्नों को
नगमें जहन में बाकी थे
फिजा क्यूं इश्के बहार हुई।

तलबगार

589) बरबादीयों से आबाद हूँ
वो बेवजह बरबाद हैं
है शिकायत उनको सभी से
मैं शिकवों का तलबगार हूँ।

फितरत

590) कैसे समझेंगे वो अंदाज
मेरा देखने का है अजब
कशिश ऐ फितरत भी खूब
वाहियात जरा आवारा मेरी।

अस्ले–हयात

591) यार तू मेरी यारी का
मुहासरा[1] न कर सका
फांद गया सोहबत[2] मेरी
अस्ले–हयात[3] भी ले न सका।

ख़फा

592) वो क्यूं मुझसे ख़फा हुए
और फिर मान भी गये
अब मैं उनसे पूंछू भी क्या
देखो फिर ख़फा हुए।

मुहासरा– घेराबंदी
सोहबत– साथ
अस्ले–हयात– जिंदगी के मायने

यारी

593) मुद्दत हुई यारों मुझे
यारी वो सब छोड़े हुए
जनाजे को न कंधा दो
बस पँहुचो कब्रिस्तान पे।

इल्म

594) मरकर हूँ मशहूर जो
मैं जिंदगी में न था
ये ना था इल्म मुझे
वरना पहले मर जाता।

परेशान

595) ख़ुद-बी खुददारी[1] से मैं

खुद कुछ परेशान जरा

करूं ना करूं खुदाई तेरी

ये बताये मुझे खुददार जरा।

आशिक

596) भटकने को सारा शहर है

क्यों इलाके में तेरा घर है

उल्फते इश्क नहीं मजमून

बेवजह आशिक मुझे बनाए।

ख़ुद-बी खुददारी- स्वाभिमान

शौक

597) क्या करूँ इस शौक अपने
वो शोहरतें रंगीन का
खामोश वक्त गुजर गया
नहीं बोलने का मन मेरा।

आदत

598) आदत खराब थी नहीं
और मैं खराब हो गया
अब क्या करूँ इलाज भी
ये शौक मेरा हो गया।

मोहब्बत

599) इज्हारे मोहब्बत का अंदाज
मुख़्तलिफ है फरक फरक
दो जान जिस्म लिपट मरें
कहीं मुलाकात बे गुफ्तगु।

आवारगी

600) है गुमान मुझको खुदी पर
काबलियत मयस्सर कुदरती
दोस्त कायल हैं पर मेरे
अंदाज ऐ मस्त आवारगी।

जमात

601) बहुत खूब समां है
तेरे हमदर्द कदर दानों का
रुखसत करो हमें अब तुम
इस जमात में जगह कम है।

अदा

602) अपनों को गैर कह देना
भी हंसीनों की एक अदा है
चलो माना कि हम गैर हैं
फिर खफा होने की वजह क्या है।

हकीकत

603) गर जिंदगी है हकीकत

तो हकीकत मौत भी खूब

डूबोगे दरिया इश्क में जो

तो बरबादी आशिक भी खूब।

शोर

604) दिल भी मिले बिन आहट

अफसाने भी बनें वो अपने

फिर जुदा हो गए वो लोग

अब शोर ए शहर वो क्यों।

जिंदगी

605) जिंदगी बस घटती रहे

है जायका वो लाजवाब

बढ़ने में कुछ खास नहीं

है खांसी ही खांसी लगातार।

बंदा

606) हैरत में हूँ मैं बेकार आज
करीब मस्जिद में यूँ देखकर
खुदा तो खुदा बहुत दूर
नमाजियों में बंदा न मिला।

अहसास

607) शक्ल और नूर से उसके
गोया मैं वाकिफ जरा न था
फिर न जाने दिलें अहसास
मस्त निगारेजान ही क्यों था।

हालत

608) गैबे[1] गैब है ख्यालों में
बयां करूँ तो कैसे करूँ
समझूं हूँ अपनी हालत को
वो न समझे तो क्या करूँ।

औकात

609) मेरी औकात नहीं कुछ जरा
तो हैसियत नहीं तेरी जरा
ये सारा शहर है अधूरा
कोई शख्स पूरा नहीं जरा।

गैबे– बे–नियाजी, उदासीनता

रिश्ता

610) है मुअम्मा[1] तुझसे मेरा रिश्ता
न गिला कोई बेवफाई का
समझूं क्या, या ना समझूं
तकल्लुफ है न खत्म होने का।

बात

611) शायरी में कोई फ़न नहीं
फ़िजा बहार अपनी जगह
नज़्म कहने का मन नहीं
तुम्हारी बात अपनी जगह।

मुअम्मा– पहेली

दास्तान

612) मेरी दास्तां मेरे अफसाने
लिखें हैं दीवारों शहर में
ढूंढेगी दुनिया मुझे मगर
दर बदर सहरा ख़ाक में।

किस्मत

613) मुफलिसी का मलाल क्या
किस्मत में न थी दौलत मेरे
वो गरीब अमीरजादे सारे
कुछ कह न सकें सामने मेरे।

अंदाज़

614) खुद को रखते हो मसरूफ[1]

या नज़रअंदाजी का नमूना

जानता हूँ अंदाज़ तुम्हारा

हमको रिझाने का फ़साना।

दिल्लगी

615) मरने का भी वक्त आया

मगर दगा दे गया

जिंदगी तेरी ये दिल्लगी

जमाने को खफा कर गया।

मसरूफ- व्यस्त

उल्फत

616) दिल है सीने में मेरे
खुदा की रहमत है वो दिल
दर्दे आगाज उल्फत का
मैं भी मानू कि है वो दिल।

बहस

617) वो पढ़ लेते हैं अक्सर मुझे
दिन के अखबार की तरह
रुकते नहीं फिर बहस में
मुझसे ही कुछ मेरी तरह।

मुलाकात

618) ना जाने क्या कह गया
उनके लिए एक बात हो गई
होती न थी जो मुलाकात
वो अब आम हो गई।

याद

619) तन्हाई भी क्या जालिम

मुझको डरा देती है

जो मिलकर हुआ बरबाद

वो याद हिला देती है।

आदत

620) चलने की आदत को अपनी

चलते चलते यूँ न छोड़

गोया तुझे न तलाशे मंजिल

फिर भी ये फितरत न छोड़।

तकदीर

621) वो आए मेरे घर

अदायत[1] हाले तकलीफ़ मेरी

तबियत में था सुधार

घर में न था तकदीर मेरी।

फसाद

622) ख़ौफे अंजाम से घबरा जाता हूँ

क्यूँ फसाद ऐसे ले लेता हूँ

हैरत में सब फितरत से मेरी

गुबारे राह[2] को हमसफर बना लेता हूँ।

अदायत– बीमारी में हालचाल पूछना

गुबारे राह– क

लमहा

623) वो रिश्ता उनसे अर्से से
चलता रहा मेरे साथ साथ
आया भी वो लमहा जब
कह न सका कि बोहत हुआ।

आशिक

624) जलील तो इश्क में
हम हुए तुमसे बोहत मगर
गुमान है खुद पर हमें
हमसा आशिक न हुआ मगर।

नब्ज

625) मुझे तो लगता नहीं
तुझसे इकरार होगा कभी
जानता हूँ नब्ज तेरी
तुझसे न इंकार होगा कभी।

कसूर

626) करते हो कत्ल मर्जी से

कहते हो कसूर मुर्दे का

सजा ऐ मौत उसे मिली

कहते हो दर्द अपने दिल का।

रुसवाई

627) है यही कशमकश फितरत

तो मेरी जां तुम ही सही

हम तो जी लेंगे यूँही

तेरी रुसवाई में कहीं।

थकान

628) चलते चलते मैं थक गया

पर पाँव रुकते नहीं जरा

कहीं मिल जाएं तुझसा अगर

सबब रुकने को मिल जाएं जरा।

यार

629) रोने से मुझे मेरे यार

न रोक बजाहिर तकल्लुफ जरा

हँस रहा था वक्ते वहदत[1]

ये रोग है इलाजे जाने न जरा।

दिल

630) दिल दिया उनको तो मगर

दर्द जिगर में ही रह गया

या रब ये सब कुछ यूँ हुआ

मैं उनको देखते ही रह गया।

वहदत– अकेलापन

आशियाना

631) रहने को बस आशियाना
और आसपास कुछ न हो
मुझे मेरी ही जरूरत नहीं
फिर सुख़न कैसे साथ हो।

नजरें

632) जाम मैंने भी लिया
बस इस लिहाज से
दिया था मुझको ढूंढकर
नजरें मिलाकर मिजाज से।

जफा

633) मुझे तो गंवारा था कुछ
जफा ऐ दौर उनका कातिलाना
न जाने क्या सूझा उनको
उस आदत से पलट जाना।

कमजर्फ

634) पहुँचा तो था मुकम्मिल

कामयाबी पर अपनी बखूब

साथ मेरे कमजर्फ[1] भी थे

अपनों के भेष में खूब।

मुकाम

635) राहे–हस्ती[2] में जनाब

इश्क भी एक मुकाम है

रुक जाएँ तो बदनाम हैं

जो चल दिये वो नाकाम हैं।

कमजर्फ– ओछापन

राहे–हस्ती– जिंदगी का सफर

बात

636) बेकरार थी निगाहें

हम दोनों की बखूब

वो बात और है

कि कुछ बात न बनी।

शोहरत

637) शोहरत तेरे भी रंग

कुछ ख़ास नहीं रंगीन

मशहूर तो महसूस करूँ

एक सूने शोर के साथ।

जशन

638) सबब न था जशन का

वो जशन ऐ जाम पीते रहे

हम बस देखते ही रहे

और ग़म ऐ जाम पीते रहे।

जख्म

639) जख्म भी कुछ वक्त के
है दिल में घर किए
फिजाओ में वो बहार है
कुछ दर्द भी लिए।

तारीफबाज

640) मशहूरों के तारीफबाज भी
सियासत से नहीं परे
फक्त तारीफ ही तारीफ में
मशहूर हो गए।

जिन्दगी

641) जिन्दगी भी गुजार दी
इस जमाने में 'बेकार'
कुछ बड़ी शिद्दत से
तो कुछ खुददारी से।

वक्त

642) उम्र गुजर गई तमाम
वक्त गुजारने को यूँ
अब मलाल आता है
वक्त गुजरता नहीं यूँ।

रहरवाँ

643) मुश्किलातें और बेबस तबाही
है मेरी हरदम हमसफर
जिंदगी जिंदा है मुझसे
मैं रहरवाँ[1] सहरा के पार।

रहरवाँ- साथ चलने वाला

यार

644) कैसे जी लेते हैं लोग

अकेले ही यारों के बिना

वो जिंदगी भी लगे गैर

तस्सवुरे यार के बिना।

मन

645) सुबह भी कुछ हसी थी

शाम का मंजर भी वही

जाने मन कहीं और था

जैसे कुछ था ही नहीं।

इत्तेफाक

646) हमने जिन्दगी गुजार दी

शायद आशिकी में कुछ

क्या अजीब इत्तेफाक है

मेरा इश्क न समझा कोई।

गुनाह

647) करों तकल्लुफ या दिखावा
क्यों करें वो हम शिकवा
जब यूँ ही चलते चलाते
इकरारे गुनाह तुम्ही से होगा।

परेशान

648) क्यूँ परेशान हूँ मैं तुम्हारी
उन कातिलाना अदाओं से
जिनके कायल है बाकी भी
सब मेरी ही तरह।

जिंदगी

649) कब तक रखेगी तू जिन्दा
मुझे ऐ जिंदगी यूँ और
खुद्दारी इतनी मुझे बक्शी
कि तुझे कुछ दे न सका।

इश्क

650) इश्क ने तेरे मुझे

कूंचा ऐ असीर कर दिया

कहता है जमाना क्यूँ

मैं आवारा ऐ इलाका हो गया।

जुबान

651) वो नजरों की जुबान

ही कह गई कुछ मुझे

वर्ना ये जमाना तो

बहरा समझे है मुझे।

आदत

652) गुजरने की उस गली से

मेरी आदत जरा न थी

बस खुदा की वो मेहर

बदनाम कूंचे में मैं हुआ।

शायरी

653) है शायरी वो रवायतें नग़मा
जो समझने में न आये
क्या समझें कि न समझे
जब हर जख्म ही दवा दे।

अकेलापन

654) अकेलापन वो नादान तन्हाई
है सिर्फ मेरी हमेशा की यार
यार तो बस सगे हैं बखूब
सिर्फ मेरी मस्त आवरगी के।

परदा

655) वो परदा ही जालिम था
जो कातिल बना बेवजह
है शुक्र अब जायका सूकून
उनकी नजरें इनायत हैं।

महफिल

656) उठकर जो हम चलें
तो महफिल खफा हो गई
जब माहौल को समझे
तो हमारे पीछे चल दिए।

फसाने

657) संभाला होश जब हमने
बस परेशानियों से घिर गए
जाने ऐसा क्या हुआ
बदनाम फसानों में हो गए।

फर्ज

658) मुझे भी कश्ती के जरिए
जाना हैं उस पार मगर
वो बात और है इस पार
भी फर्ज निभाने हैं मगर।

किरदार

659) बहुत हैं छुपे राणा और
राहत अभी पहचान को
फलसफा ये शायरी बखूब
छुपाती भी है किरदार को।

मसरूफ

660) फिजा तो आती ही है
और आ भी गई इस बार फिर
हम ही कुछ मसरूफ रहे
गैरों के साथ ही बेवजह फिर।

मुश्किल

661) जिंदगी को छोड़ना भी बेवकूफी

जीना है इसको चाहे मुश्किल

क्यूँ मुसलसल[1] गुनाह हमारे

बात न करें उनकी तो भी मुश्किल।

हसरत

662) हमदर्द मेरे कहतें हैं

जख्म भर ही जायेगा

दिल जानता है खूब

दिल में हसरतें उनकी।

मुसलसल– लगातार

इश्क

663) वफा तो की, न करता कैसे

था लाजमी फितरते इश्क मेरा

तू भी लैला न हुई मेरी

खामखाँ कैस बन गया तेरा।

फिजा

664) हमें हवाओं में न धकेलो

कि गैरजिम्मेदार हैं हम

है कायनात[1] ये जब से

फिजा से महरूम हैं हम।

कायनात– शृष्टी

यार

665) हंसना भी जरुरी है

यार मिलते हैं जब मुझे

कैसे कहूँ मैं उनसे

कि गम छोड़ते नहीं मुझे।

बेखबर

666) मौत आई जब हमें

बेखबर जमाने से हुए

जिंदगी की क्या कहें

बेखबर जमाने से रहें।

आदत

667) आदत तो सुधार लूँ मैं

मगर होगा भी फिर क्या

जमाना कहेगा मुझे

ऐसी भी जरूरत थी क्या।

बात

668) मुझे तो बात भी करनी
जरा आती नहीं थी मगर
न जाने उनको क्यों
मेरी ही बात अच्छी लगी।

बात

669) कहने की आदत नहीं मुझे
बेशक बेहद हंसी हो तुम
शुरुआत भी हुई गर जरा
बात रह जाएगी कहते कहते।

जिंदगी

670) ये हकीकत है मेरी
जिंदगी दिलचस्प रही यारों
वो बात और है पर
कि वो जिंदगी न हुई मेरी।

ख़लिश

671) ख़लिश तुझसे मुझे बजाहिर सी
सिलसिला सा चला कुछ चलने का
न जाने तूने क्या कर डाला
ख़लिश अब है कि ख़लिश नहीं।

बदनाम

672) वज़हात भी तेरी बस बेबस
तेरी तब्बसुम[1] भी लगे बेज़ार
मैं गमों से घिरा हूँ बेफिक्र
फिर बदनाम हूँ बेजा बेकार।

तब्बसुम– मुस्कराहट

नींद

673) बड़ी मुद्दत के बाद
वो नींद आई थी मुझे
गफलत में उठ गया
वो फिर लौट तो न आए।

लमहा

674) वो मिले मुझे कुछ ऐसे
कि खाविंद[1] साथ थे
मुलाकात तो कुछ न थी
हाँ वो लमहा खास था।

खाविंद– मर्द

तलब

675) नजाकत में तेरी कुछ कशिश है जरा
मेरा भी कसूर है नाजुक जरा
अंजान न बन यूँ इस तरह
तुझे सिर्फ मेरी ही तलब है जरा।

इजहार

676) दिल खुश कर दिया
उनके अंदाज ऐ इजहार ने
गोया मशवरा थी वजह
उनके अंदाज ऐ इजहार में

गुफ्तगू

677) मुझे ढूंढते वो आएंगे
फ़कत गुफ्तगू ऐ फलसफा
कौन बताएगा उन्हें
मेरा कोई ठिकाना न रहा।

फितरत

678) मुझ को तो हमेशा घुटन मिली
तुझे पता चले या न चले
वहशतकशे[1] मेरी फितरत नहीं
वहदतकशे[2] मेरे साथ चले।

दर्द

679) जख़्म है यूँ दिया मुझे
वो तोहफा ऐ तोहमत यार का
इलाजे तबीब बहुत हैं मगर
मैं आशिक हूँ इसके दर्द का।

वहशतकशे- गमों से घबराना
वहदतकशे- अकेलेपन से घबराना

दौर

680) हमने तो न की आशिकी

हाँ गुफ्तगू की जरा

मसअले भी ऐसे कुछ न थे

वो दौर न रूका जरा।

सफर

681) वो मोहब्बत ठहर गई मेरी

गोया सफर अभी बाकी है

ऐ जिंदगी तू तो जाने है

मुझे और भी काम बाकी है।

मन

682) मालूम था हर हाल में

वो बज़्म में आऐंगे जरूर

था दिल भी बेकरार मगर

जाने का मन न हुआ।

नजाकत

683) उनकी नजाकत उनकी अक़ीदत
सबब नहीं फिर उठने का
जाम रखा था पीने को
नहीं हाथ उठा उसे पीने को।

तन्हाई

684) ऐसी क्या तन्हाई में
मायूसी ही हो जरूर
हमने तो सारी जिन्दगी
खुशी खुशी गुजार दी।

दर्द

685) हकीम ही हर दर्द को
मिटा दे ये नामुमकिन
हैं और भी ठिकाने मगर
हर शहर में ये मुमकिन।

शहर

686) नहीं था कोई रोने को
मेरे जनाजे में शहर में
बारिश रुक गई थी जरा
मिजाज देखकर शहर का।

जमाना

687) मैं भी जमाने के साथ
सफर में मुसाफिर बन गया
सफर तो बस कट गया
जमाने से आशना[1] न हुआ।

आशना– परिचय

बेवफाई

688) है कुछ कमजोरी दिल की

या मोहब्बत का आलम जानो

क्यों नजर नहीं आती

उनकी वो आदत वो बेवफाई।

गिला

689) बरबाद तो कर दिया मुझे

अब गिला भी क्या करूँ

जिन्दगी में कुछ और मेरा

तारीफ ऐ काबिल भी न था।

खबर

690) खबर तो ऐसी न थी

कि दिल मायूस हो जाए

बस यही काफी था

कि कोई खबर न आई।

फैसला

691) लगता है जिदंगी में मैंने
कुछ खास नहीं किया
सफर है, मयकदा भी खूब
बैठकर अंदर फैसला कर लिया।

मजबूरी

692) मुझे आज ही दिखे है
तेरा चेहरा मेरे ऐ दोस्त
बरसों गुजर गए क्यों
मजबूरी भी न थी ऐ दोस्त।

दिल

693) यूँ तो दर्द की ऐसी
जगह न थी दिल में कहीं
अपनी ही बात ऐसी
दिल में घर कर गई कहीं।

ग़ैर

694) अपने भी तलाशे नहीं जाते

चले जाते हैं फिर आ जाते

रह जाते फिर हम ही तन्हा

जो ग़ैर हमसे मिलने न आते।

कशमकश

695) हम तो शर्माते ना थे

हया उनकी असर कर गई

पछताऐ कशमकश से

कि आगाजे इश्क न हुआ।

बज़्म

696) बोहत पी शराब जब

फिर भी कम पड़ गई

उठे बज़्म से यूँ सब

चलो फिर कल सही।

मजबूर

697) दर्द तो मेरे जिगर में
बरसों से थे मगर
हँसता रहा फिर भी
जमाने से मजबूर था।

आवारगी

698) पहचानना हर किसी को
आसान नहीं है अब
आवारागर्दी जिन्दगी भर की
बेकार लगे है अब।

आइना

699) आइना दिखाए मुझे
मेरा ही चेहरा हर बार
देखता है फिर बशर
वो आइना क्यों हर बार।

किस्मत

700) वो लड़कपन ही था
कि मैं दिल लगा बैठा
कमबख्त किस्मत ही ऐसी थी
जो मैं बरबाद न हुआ।

शिकवा

701) वो हमसे पेश आते हैं
कुछ कुछ गैरों की तरह
ताज्जुब है उनकी बेचौनी
कि हमे शिकवा भी नहीं।

दर्द

702) जल्दी इजहारे इश्क कर दिया
जायका तुमने बेफिक्र लिया
मुझे वक्त मिला न कहने का
दर्द मोहब्बत का मैंने लिया।

बख़्शीश

703) सफर में तो दीदारे मजार

शायद शामिल न थी

बख़्शीश की आस फकीरों में

दुआ देने से ज्यादा थी।

बदनसीब

704) गर्दिशे-मुदाम[1] भी लाजिम हैं

यूँ तो जमानेभर के लिए

कुछ बदनसीब भी हैं वो

महरूम हैं एक गम के लिए।

गर्दिशे-मुदाम- दौरे मुशीबत

एतराज

705) दिल में एक कसक सी
है तेरी अदा ऐ जफा की
न जाने फिर भी क्यूँ
दिल को एतराज भी नहीं।

हकीकत

706) बड़े नामी आशिकों में
हम भी थे शामिल यूँ
कि हकीकत की बात
आशिकी मेरी फितरत नहीं।

दास्तान

707) दास्ताने उन्होने भी
बड़े अर्से तक कही
दफन हुए मुद्दत हुई
दास्ताने भी रही नहीं।

हसरत

708) दिल में थी जरूर

वो कुछ हसरतें उनकी

खुदा का शुकर

वो मुझसे दूर ही रहे।

सियासत

709) जमाना सियासत का है

लोगबाग सियासी नहीं

एक उम्र गुजर जाती है

ये मजमून समझने में।

फुरसत

710) थी खबर हमें मिली

वो फना हो गये

फुर्सत में थे जरूर

मय्यत में शामिल न हो सके।

बात

711) हर बात पर मुझे तुम्हारे

क्यों प्यार नहीं आया

वो हर बात पर तुम्हारे

मुझे कुछ यकीं नहीं आया।

वास्ता

712) मेरा तो वास्ता था नहीं

गुनाहों से जो मैंने किये

रुसवाई तेरी न हो कहीं

वो यूँ कबूल मैंने किये।

आदत

713) ताल्लुकात बस बेकार रहे

आदत वो उनकी दिलफेंक

समझते हम पहले भी रहे

गैरों की लपकागिरी एतराफ।

जिरह

714) अब भी तलब है मुझे
तुझसे गुफ्तगू ऐ जिरह
जानता भी खूब हूँ
वो ताल्लुक नहीं उस तरह।

बात

715) वैसे तो ये जिंदगी मेरी
खफा न थी किसी बात पर
तमाम वक्त गुजरा मेरा
इसे समझाते हुए बेबात पर।

बात

716) रफ्ता रफ्ता उनसे जरा
अब मोहब्बत की बात है
अंजाम की भी क्या फिक्र
ये तो जमाने की बात है।

इत्तेफाक

717) देखना ही था उनको

बज़्म ऐ गजल काफी थी

कुदरत ऐ इत्तेफाक

अब वस्ल[1] ऐ बात हो रही।

फितरत

718) जीने की भी फितरत

बस बाज नहीं आती

दिल जानता है खूब

जिंदगी में ऐसा कुछ नहीं।

वस्ल- मिलना

मसाइले

719) थक कर चूर मैं
जिंदगी से हो गया
मसाइले[1] जिंदगी की
है कि छोड़ती नहीं।

महजबीन

720) शहर में सब बरबाद थे
महजबीन के लिए
क्या कहें हम हाले दिल
अभी वो मेहरबान थे।

मसाइले- समस्याऐं

गुफ्तगु

721) मर ही गया मैं भी जब
फूंक दिया मुझे आग में
छेड़ते हो राख यूँ अब
क्या ये गुफ्तगु अंदाज है।

वजूद

722) मैं खुद तो वही शय हूँ
मेरा वजूद बिखर गया
कैसे कहूं मैं दिल को
कितना तन्हा हो गया।

इश्क

723) मुझे तो लगता था
कि इश्क में मर जाऊँगा
समझाया उन्होंने बखूब
यूँ भी मरा जाता नहीं।

रुतबा

724) रुतबा भी शौहरत से
मिलता तो है बशर
जरूरी नहीं जरा भी
ये जायज हो मगर।

मंजर

725) कहर ऐ मौत का मंजर
सोचा न था कभी
कहती हैं फिर हस्तियाँ
और भी बाकी अभी।

बात

726) वो बात हाले-दिल कही
जो बात हाले दिल न थी
कुछ जिद उनकी ऐसी थी
वही बात हाले दिल कही।

दास्तान

727) बड़े खुशनसीब वो शख्स

जो गमो से परेशां रहे

क्या कहें उनकी जो बे गम

न कोई दास्तां न बयां।

दौर

728) वक्त भी क्या चीज है

मिटा देता है सब ख़ाक में

ख़ाक अब बची नहीं

मिटने का दौर बस जारी है।

तमन्ना

729) वो तमन्ना फिरदौस की

सुनी थी बातों में कभी

सब तड़पते हैं यहाँ

रहने को और साँस बगैर।

इत्तेफाक

730) मुझे तुम्हारी बदगुमानी[1] से
क्यों इत्तेफाक होने लगा
मैं मशहूर हूँ शहर में कुछ
इस अंदाजे फितरत से जरा।

अहसास

731) हालात ऐ शहर भी खूब
एक खौफ में चल रहे
कोई अहसास मुझे दे
जिंदा भी हूँ कि नहीं।

बदगुमानी– गलतफहमी

जिन्दगी

732) जिन्दगी खूब बच रही
है कातिल से आज
जिन्दगी खूब गले मिल
रही है कातिल से आज।

ख्याल

733) समझ में आया नहीं
आखिर वो क्या ख्याल था
जहन से निकला नहीं
रातभर नींद भी आई नही।

आदत

734) न गुफ्तगू खुद से हुई
न उनसे भी गुफ्तगू हुई
खलवत ऐ अंदाज कुछ
बस मेरी आदत हुई।

जिक्र

735) लिखने को पन्नों पर
क्या क्या लिख दिया
मेरा ही जिक्र था
जो दिल में रह गया।

दिल

736) कितना मायूस हूँ मैं आज
कि दिल कुछ जानता नहीं
हिफाजत अपनी तो कर लूँ
मगर नफस का पता नहीं।

मुद्दा

737) हूँ मैं कुछ भी तो नहीं
था ये मुद्दा महफिल में कल
पता उनको भी लगा
तो मिलने आए हैं वो अब।

रिश्ता

738) जब रिश्ता ऐ इश्क

उनसे न था हरगिज

फिर कैसा ये शिकवा

वो बेवफा निकले।

ख्याल

739) बैठा तो था मयकशी को

कुछ सुकून के लिए

ख्याल फिर भी आ गया

कि साथ नहीं थे वो।

ख्याल

740) ये भी क्या ख्याल

कि तू है ही नहीं

ख्याल तो चलो छोड़ दूँ

क्यूँ हकीकत छूटती नहीं।

मयकशी

741) मयकशी के साथ मुद्दे

जमकर उछल रहे

हैं इधर चार यार

खामखां संजीदा हो रहे।

मौत

742) आगाह तो मौत का

किसी को था न बशर

फिर भी इस ख्याल का

एक खौफ है मगर।

मजमून

743) तन्हा कितना हूँ मैं

तेरी सोहबत में भी

इजहारे जुबां ये

क्यूँ मजमून नहीं।

इत्तफाक

744) शहर में सब जाने
पहचाने नजर आते हैं
कैसा इत्तेफाक है ये
मुझे कोई जानता नहीं।

इजहार

745) मुझे तो मयस्सर[1] ही था
उनके इश्क का इजहार
जमाना देखता रह गया
चमन फिजा ऐ बहार।

मयस्सर– प्राप्त

दौर

746) हम मिलते थे मुलाकात बगैर
गुफ्तगु भी की थी बात बगैर
चलता रहा दौर जिंदगी भर
हम जीते हैं आज भी तेरे बगैर।

तबीयत

747) हाल तो बुरा तबीयत का
ज्यादा ही खराब है
मुश्किल से बता भी दूं मैं
पूछने वाले कम नहीं।

सफर

748) है हमसफर कजा[1] यूँ कुछ
कि सफर ही कातिल लगे
फना भी चाहे हो न हो
ऐसा ही फन हवा में लगे।

यार

749) यारी भी लगे अपनी
जब यार साथ हो
कैसे छूटेगी ये कब
चाहे यार फना हो।

कजा– मौत

मोहब्बत

750) मोहब्बत की भी हद

तो तब हो गई

उनसे तो उनसे

उनकी खाला से भी हो गई।

तकल्लुफात

751) मैं भी हाले तकल्लुफात

घिरता ही चला गया

बस कुछ कुदरते करम

उन्होनें सब जान लिया।

आग

752) दिल शिकस्ते ख़ाक मेरा

क्यों जी रहा हूँ मैं

आग जिगर में लगी हुई है

जलने को जी रहा हूँ मैं।

फलसफा

753) जमाने ने तो दे दिया
मुझे तमगा ऐ फलसफा
इत्तेफाक भी क्या खूब
ये फुर्सत मिल गई।

कदर

754) मुझे तो न थी कदर जरा
किस्से मेरे शहर ऐ जुबां
है वक्त भी क्या खूब
मुझे कोई पूछता नहीं।

रंगीनियत

755) था वो दौर रंगीनियत
तसव्वुरे सफर भी खूब
अब तो जहन मे यूँ
ख्याल भी आता नहीं।

रास्ता

756) बस गुजरना उनके कूंचे से

रस्ता खुद ब खुद मिल जाता है

क्यों भटकता हूँ शहर में

जहाँ रस्ता खुद भटक जाता है।

मकसद

757) वो मिलने तो आए

मगर अहसास दे गये

जीने का ये मकसद

फकत मुलाकात तो नहीं।

बदनसीबी

758) अब क्या शिकवा जमाने से

बदनसीबी का करूँ

मरने का मंजर भी था खूब

वंहा मैं मौजूद न था।

नसीब

759) सैलाबे गम जिंदगी में
मुसलसल आता ही रहा
नसीब थे अपनों के
हमदर्दी में जी बहलता रहा।

इत्तफाक

760) अक्सर भटक जाता हूँ मैं
मुकामे सफर अपने लिए
कैसा इत्तेफाक है ये
कि पेशे से राहबर[1] हूँ मैं।

राहबर– रास्ते का साथी

जख्म

761) अपने एक दर्द का
इल्जाम न दो जमाने को
हजारो जख्म वो
तुमने ही दिये जमाने को।

अंदाज

762) मेरे हँसने का अंदाज
भी तुम क्या समझोगे
जब रोओगे दिलभर के
ये अदा खूब समझोगे।

शुक्र

763) शर्म और हया ही थी
वो दामन छुड़ा गये
खुदा का शुक्र है वो
कि मेरे घर तो आ गए।

इश्क

764) किस्से इश्क के उनके
शहर में सुनते हैं लेकिन
बर्बादी का भी जिक्र
वहाँ होता है मेरा मगर।

सफर

765) लगजिशे[1] सफर वक्त वो
अब तो रस्ता आसां है
फिर भी लड़खड़ा जाता हूँ
सफर वो याद करके।

लगजिशे– लड़खड़ाहट

लम्हा

766) बड़े बेजार से लम्हे थे

दौर ऐ इश्क हुस्न में

क्यूँ जहन में आ जाते हैं

बेनियाजी[1] में कभी कभी।

जमाना

767) कह तो दिया सच मैने

यारब शायद ऐसा था नहीं

इस झूठ के जमाने ने

क्यों उसे नकारा भी नहीं।

बेनियाजी– फक्कड़पन

ठिकाना

768) मिला था एक ठिकाना मुझे
सरे राह चलते चलते कभी
न जाने कैसे छूट गया
याद आता है बोहत अभी।

दस्तूर

769) मुझे अपनी फितरत से मतलब
वो अपनी आदत से मजबूर
सफर गुजरेगा जिंदगी का यूँ
बस यही जमाने का है दस्तूर।

परेशान

770) अदायत[1] में तुम आए
मुझे बीमार समझ कर
खामखां परेशां हुए
क्यों परेशां नहीं था मैं।

दास्तान

771) हरगिज न थी आरजू
क्यों तुझसे बात हो गई
था इत्तेफाक या वाकया[2]
दास्तां ऐ जुबां हो गई।

अदायत– बीमारी का हाल पूँछने
वाकया– किस्सा

मंजिल

772) मंजिल मिली मुझे अफसोस
एक कदम पहले फ़ना हो गया
आया हूँ फिर ख़ल्क[1] में
वो कदम तय कर गया।

हलचल

773) एक हलचल सी शहर में
मैं सब खाक हो गया
ये यकी था मुझे भी कुछ
होनी को गंवारा न हुआ।

ख़ल्क– दुनिया

अफसोस

774) मुझे तो पीनी ही थी

अफसोस मगर ये

कि न तेरी याद है

न कोई और गम।

मोहब्बत

775) वो कैसे कह दें

कि उन्हे हमसे मोहब्बत नहीं

आखिर अर्से बाद

हमसे ये रिश्ता तोड़ा है।

याद

776) जिक्र मेरा भी हो बज़्म में

यारों को मंजूर नहीं

छेड़ते हैं नगमा ऐ बज़्म

मेरी याद के बगैर नहीं।

वक्त

777) गुजारता हूँ गुजरता है वक्त
इस जहाने खराब में
कैसी तासीर है अजब
कोई मरता भी नहीं।

रिफाकत

778) रिफाकत ऐ मौत जीस्त से
मुद्दतों से है बदस्तूर
जमाना भी वाकिफ है खूब
अंजान फितरत है दूर।

हवा

779) हर इलाका ऐ शहर में
एक कमज़र्फ[1] सी हवा
कितनी आम हो गई है
हर नफ़स[2] को ये हवा।

आबोहवा

780) आबोहवा में कुछ जहर
अभी और चलेगी
न निकले बाहर तो अच्छा
जो बलगमी मिजाज हैं।

कमज़र्फ– ओछापन
नफ़स– सांस

हालात

781) देखकर हालात भी कुछ
मुझे अच्छे ही से लगे
चलो दो दिन की ही बात है
यारब वो और अच्छे लगे।

जाम

782) बज़्म में साकी ऐ प्याला
कुछ वजह तसल्ली तो हुआ
पिया औरो ने भी जाम
उनको वो असर जरा न हुआ।

बज़्म

783) निगाहें उनकी मेरी तरफ ही थी
मरजी उनकी कि मतलब न था
मैं भी वाकिफ था माजरे से खूब
बज़्म में मुझसे कोई दूसरा न था।

रुस्वा

784) कसरते आशिकी से माशूक बन गई
किया नजरअंदाज खफा हो गई
हुआ रुस्वा मैं आवारा बेकार
और काम से छुट्टी हो गई।

आदत

785) क्या कहूँ तुझसे तेरी आदत
वाकई मुसल्लम[1] है इश्क में मेरे
मुझे ही कुछ भूल जाने की
न निकले जहन से चेहरा तेरा।

मुसल्लम– क

दौर

786) जिन्दगी भी गुजर गई

कर जलील हसरतों को जरा

कितना नायाब दौर था

थे बेख़बर जहालत से जरा।

फितरत

787) हम तो माकूल रहे

अपनी फितरत की वजह

वो भी नामाकूल रहे

अपनी फितरत की वजह।

मोहब्बत

788) मोहब्बतें माशूक से मैंने

किनारा कर लिया

वो जो एक मज़मून था

जमाने को दे दिया।

जिंदगी

789) मरना भी है जिंदगी में जरूरी
गोया जिंदगी जिंदा हो कि न हो
बेशक जिंदगी में कुछ न हो
पर मौत बेमौत भी मुकम्मिल है।

घर

790) आए नहीं घर मेरे तुम
कहा दरवाजा बंद था
रहता हूँ मैं जहाँ अभी
दीवारों दरवाजा नहीं वहाँ।

शबाब

791) बेवजह हूँ मगरूर
मुलाकात ऐ शबाब से
हैं और मेरे यार
जरा भी हवा नहीं देते।

शौक

792) घर में ही कुछ लकीर
दश्त की खींच लेता हूँ
अपने शौक तन्हा को
बस एक आसरा देता हूँ।

बिछड़ना

793) तुम भी मुझसे मिल कर
बिछड़ना जब भूल गए
हम भी मिलते मिलते
कुछ बताना भूल गये।

मलाल

794) क्या मलाल जमाने से
बस खुद से ही समझिये
जिंदगी थी बड़ी हसीं
हमने अहमियत ही न दी।

अफसाना

795) फिर वो ही तराना
कि अफसाना बनेगा
था वो कभी वक्त
अब तो न पूछेगा कोई।

इलाज

796) ये आशिकी भी खुद ब खुद
बीमारी है बहुत बुरी
ग़ोया मिल जाए इलाज भी
तो दवा भी बहुत बुरी।

आदत

797) दौर भी वो खूब था
जब परवाह करें थे हम
अब तो इन बातों की
हमें आदत सी हो गई।

गुफ्तगू

798) करते थे मुलाकात में
एक गुफ्तगू बजाहिर सी
छेड़ दिया मैने भी यूँ
बातों का उनके जवाब नहीं।

मैखाने

799) क्यों न गुलजार[1] हो साकी
खबर मैखाने में वो आई
फ़ना जो रिन्द[2] हुआ था
उसने घरपर शिफ़ा[3] पाई।

गुलजार– खुशनुमा
रिन्द– शराबी
शिफ़ा– बीमारी से ठीक होना

तकल्लुफात

800) बड़े कमजोर हो जाते हैं
तकल्लुफातों की राहों में
वैसे भी क्या रक्खा है
जरा सेहतमंद हो जाने में।

प्याला

801) है प्याला हाथ में अब
कमजोरी से निजात पाँऊ
नहीं तो क्या खबर है
बेवजह ग़मगीन हो जाऊँ।

आशिक

802) मुझे आशिकों में बदमाशी
नज़र आने लगी जरा
आशिक तो न था मैं मगर
हटा ले गया उन्हे जरा।

हुनर

803) बड़े बड़े हुनरमंद वो

न हुनर से हैं वाकिफ

चलते हैं जमीन पे

उसकी फितरत से न वाकिफ।

रकीब

804) थी रकीब से कुछ उम्मीद

चलेगा फ़साद वो लम्बा

रब को था न ये मंजूर

वो धमकी से हुआ लम्बा।

जलसा

805) वो मुझ पर भी दो फूल

गिरे थे शहर में कल

दिखावे का एक जलसा

हुआ था शहर में कल।

मलाल

806) थी बरबादी ही मयस्सर

वो किस्मत में था लिखा

फ़कत मलाल है मुझे

न उनका नाम था लिखा।

तहजीब

807) वो बज़्म वो जमात

जरूरत नहीं मुझे जरा

हैं और जरूरतमंद

जिन्हें तहजीब नहीं जरा।

कज़ा

808) कज़ा भी आराम से आई

सुकूं भी लाज़मी था

सुकूं जिंदगी में न था यूँ

मगर वो लाजवाब थी।

अखबार

809) सुबह का अखबार तो
पढ़ लिया एक रुटीन से
दिन भी बस गुजर गया
दौर चायों के रुटीन से।

रस्म

810) उठा लाए मेरे बोझ को
कुछ मोहल्ले भर दूर
पटककर फिर फूँक दिया
रस्म पूरी हुई बदस्तूर।

शिकवा

811) हो तन्हाई भी अफसाना
गर कुछ लम्हे हो वो
सारी जिंदगी यूं गुजर गई
कैसे शिकवा करें वो।

अहसास

812) जिंदगी को जिंदा रहने का
जरिया न समझे हुजूर
इसमे अहसास है मरने का
जीने से ज्यादा जरा।

पहचान

813) था नाम भी हमारा
इलाके में उस वक्त
न थी उनको मयस्सर
पहचान उस वक्त।

सुकूं

814) बदनामी भी बेवजह
मुझे बदनाम कर गई
है मुझे भी जरा सुकूं
अपना काम कर गई।

इत्तफाक

815) है समझ भी यूँ जरा

न आए जहन में इस वक्त

है इत्तेफाक भी मगर

वो आए हैं घर में इस वक्त।

उल्फ़त

816) कौन कमबख्त यहाँ

उल्फ़त का मारा है

वो निगार कूंचे में मिले

उस लम्हे के मारे है।

बात

817) अपनी ही बात से

क्यों बचता है बशर

बकवास ही सही

पर तेरी बात है मगर।

अल्फाज

818) लगता नहीं मैं वो हूँ
कहते हैं मेरे अल्फाज
ख्याल जरा कुछ ऐसे
कहते नहीं मेरे अल्फाज।

रहम

819) अदा ही कुछ ऐसी
कि कत्ल हो जाए
फिर करे हैं गुजारिश
कि रहम हो जाए।

कशमकश

820) कशमकश से निकलकर
आगाज तक पंहुचे तो जरा
खड़े थे जो देर से वो
क्यूं आगे चल दिए जरा।

मयकदे

821) सियासत ऐ जम्हूरियत[1]
भी है मुख्तलिफ कुछ जरा
जीते हैं जहाँ 'आप'
खोलेंगे मयकदे और जरा।

मुसाफिर

822) मुझे जिन्दगी के सफर में
मुसाफिर न समझा जमाने ने
मिला जब मौत का मुकाम
कंधो पर उठा लिया जमाने ने।

जम्हूरियत– लोकतंत्र

मोहब्बत

823) रोने को तो है बोहत कुछ
पर फसाद करने हैं जरा
ऐ मोहब्बत देखेंगे तुझे
पर जिहाद करना है जरा।

दास्तां

824) मैं जिससे भागता ही रहा
वो न थी हरगिज दास्तां मेरी
न जाने क्यों मिल ही गई
जो न थी हरगिज दास्तां मेरी।

तहजीब

825) यूँ भी सब्र कर लेते हैं
लोग बेसब्री में जरा
है रवायत[1] या तहजीब
कोई बताए मुझे जरा।

जमाना

826) मैं हंसरतों का ऐब
लिए बेकार तो हुआ
चलो कोई बात नहीं
जमाना गुलजार तो हुआ।

रवायत– परंपरा

लम्हा

827) वो लम्हा ही था

एक खता करने का

कितना तड़पता हूँ

जब मैं वो न कर सका।

नाजनीन

828) क्या नसीहत दूं तुम्हे

मैं ऐ नुमाइश ऐ नाजनीन

हिजाब में पहले ही थे

अब मुखौटा भी लगा लिया।

सुकूं

829) अब तो सुकूं भी जरा

दे अहसास बड़े दर्द का

होगा यही अब सबब

हम सुकूं से महरूम ही रहे।

रवायत

830) मौत भी क्या करेगी
हम जिंदगी भर न जिए
बस रवायत के लिए
जिंदगी को अपना किए।

शौक

831) शौक ही शौक में हमने
हांसिल बड़ी तालीम कर ली
हार गए इम्तिहान में
जब मुकाबला अपनो से हुआ।

गम

832) उस गम की औकात
इतनी भी न थी मगर
फिर उनका यूँ मिलना
मेरी किस्मत थी मगर।

रश्क

833) जान गई जाने भी दो

रस्म ओ रोना है बेकार

था दिल में रश्क[1] मगर

है दिल में रखना अब बेकार।

जमाना

834) जिंदगी सारी गुजर गई

खबर जरा न जमाने को हुई

हम भी जमाने के थे

और अब न जमाने के रहे।

रश्क– ईर्श्या

बेवफाई

835) ये भी एक फितरत है
मर–मिटने की खामख्वाह
वग़रना बेवफाई के
कमबख्त अफसाने न होते।

मुसाफिर

836) जिन्दगी भी गुजरी तन्हा
भीड़ भरे सफर से
कहते हैं ये रवायत
मुसाफिर बेखबर कारवां से।

ग़म

837) मारे खुशी के जब
हम हँस तो दिऐ थे मगर
उन्हे न मालूम था
हम ग़म के मारे थे मगर।

यारी

838) यारों ने तो न दी
कोई रंजिशे अहसास
बस उनकी यारी ही
आगाह करती रही मुझे।

यार

839) ऐसा तो कुछ न था
जो मैं यार कहूँ उसे
तकुल्लफे बंदिश थी
यूँ जिंदगी गुजार दी।

भीड़

840) एक शोर की आहट थी
उस शहर के सन्नाटे में
और बेकरार भीड़ थी
उस सुनसान इलाके में।

मोहब्बत

841) लगता तो नहीं मुझे जरा

कायल मोहब्बत का हो जाऊँगा

ग़म और जख्म हैं यहाँ

वहाँ भी रूबरू हो जाऊँगा।

जमाना

842) फितरत मेरी और जमाने की

आपस में जरा न बनी

कुछ रुसवा मैं भी रहा

तो जमाना भी पीछे न रहा।

दास्ताँ

843) एक अजब सी दास्ताँ हैं

कि तुम्ही तुमपर हो मेहरबां

यहाँ जिंदगी गुजर गई है

क्यूँ नहीं तुम जरा भी मेहरबां।

आबोहवा

844) आबोहवा ऐ जिन्दगी
फ़कत दम घोटने को है
फिर भी हँस लेता हूँ
अपने हो या गैर साथ।

हलचल

845) एक हलचल सी शहर में
मैं सब खाक हो गया
ये यकीं था मुझे भी कुछ
होनी को गंवारा न हुआ।

इजहार

846) अभी रिश्ता ऐ कशमकश
चलना था थोड़ा और
रब को न था मंजूर जरा
उनसे इजहार हो गया।

रुसवा

847) किया जो रुसवा मुझको
जमाने ने, क्या कहिये
जानता नहीं कुछ ऐसा
उल्फते माशूक, क्या कहिये।

रश्क

848) यारब ये रश्क[1] जमाने का,
मुझीसे भी ऐसा क्या।
है फितरत हमारी नाजुक,
उसे सताने से भी क्या।
कैदे हस्ती से जुदा,
हसरत वो है सर चढ़ी।
होगा न कभी वो अंजाम,
मुझे मिटाने से भी क्या।

रश्क– ईर्श्या